भिखारी ठाकुर

साहित्य और समाज

जीतेंद्र वर्मा

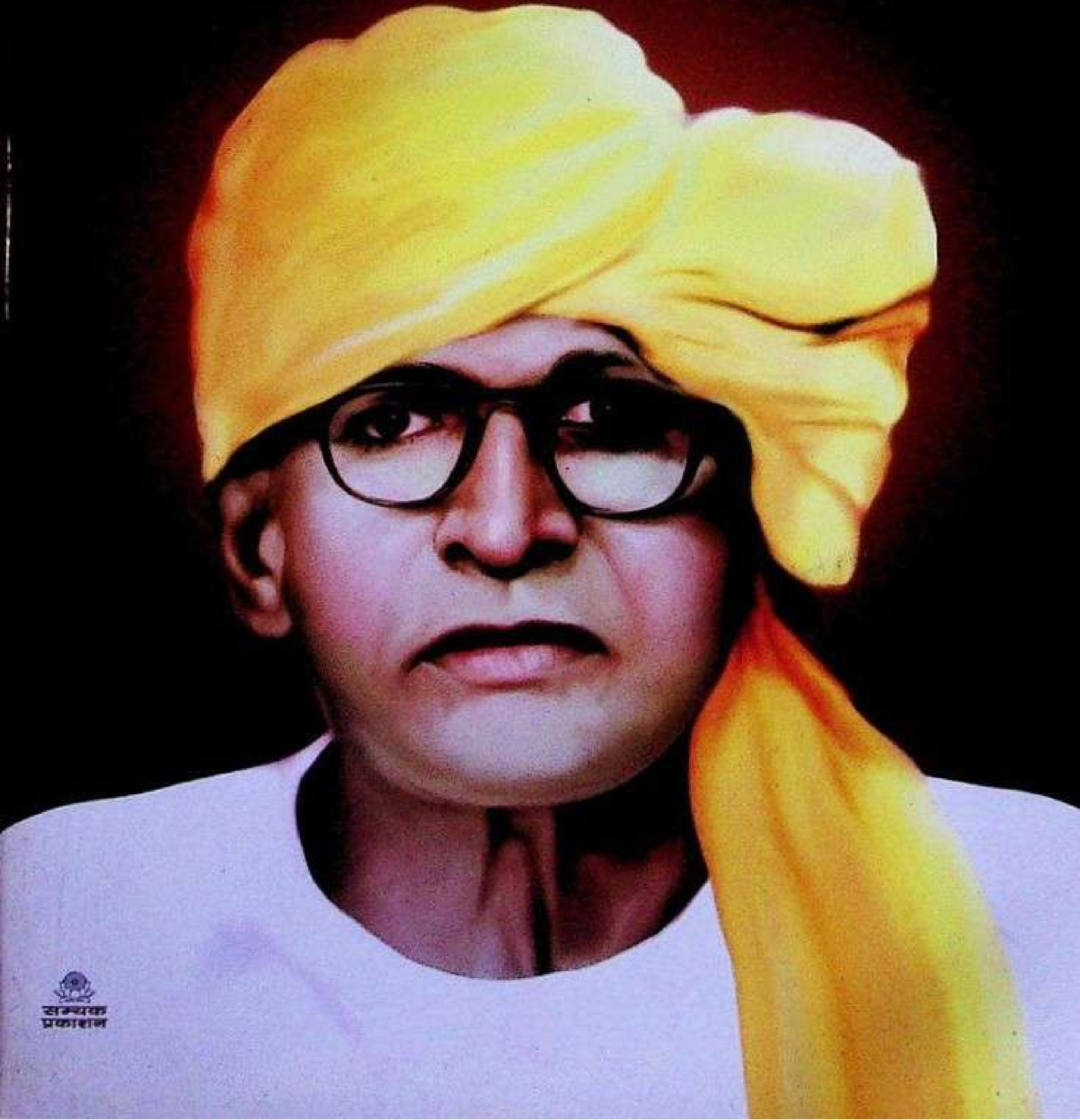

सम्यक
प्रकाशन

भिखारी ठाकुर

साहित्य और समाज

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर

साहित्य और समाज

जीतेंद्र वर्मा

सम्यक प्रकाशन

www.bhojpurisahityangan.com

प्रथम संस्करण : 2021 (बुद्धाब्द 2565)

ISBN : 978-93-89849-98-1

प्रकाशक : **सम्यक प्रकाशन**
32/3, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली—110063
दूरभाष : 9810249452, 9818390161
Email: hellosamyak1965@gmail.com
Web : www.samyakprakashan.in

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश को इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटो. कॉपी, रिकार्डिंग या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने के पूर्व लेखक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य : ₹ 40/-

रचना : भिखारी ठाकुर
रचनाकार : जीतेंद्र वर्मा
आवरण : शांत कला निकेतन
शब्दांकन : संदीप आर्ट एंड ग्राफिक्स

मुद्रक : गौतम प्रिंटर्स, नई दिल्ली

www.bhojpurisahityangan.com

समर्पण

पिता केशवचंद्र वर्मा को,

जिनके मुंह से पहली बार

भिखारी ठाकुर का नाम सुना था

www.bhojpurisahityangan.com

अपनी बात

बरजत रहले बाप-मतारी

मैंने भिखारी ठाकुर का नाम सबसे पहले अपने पिताजी के मुंह से सुना था। वे अपने समवयस्कों से बातचीत कर रहे थे। भिखारी ठाकुर संसार से विदा हो चुके थे, परंतु उनकी 'नाच मंडली' हमारे क्षेत्र में सक्रिय थी। मेरे गांव के बगल में उनकी मंडली आई थी। वे उसी के बारे में बात कर रहे थे। अचानक उन लोगों की नजर मुझ पर पड़ी, तो वे अचकचा कर चुप हो गए। फिर मुझे खेलने के लिए बाहर भेज दिया। असल में उन दिनों धारणा थी कि भिखारी ठाकुर का नाच-नाटक देखने से बच्चे बिगड़ जाते हैं।

मेरे मन में भिखारी ठाकुर को जानने की जिज्ञासा यहीं से शुरू हुई। मेरे बालमन को लगा कि भिखारी ठाकुर जरूर कोई खेल-खिलौना या मस्ती की चीज है, जिससे बड़े मुझे उनसे दूर करते हैं। बड़ा होने पर मैंने धीरे-धीरे भिखारी को पढ़ा-जाना और समझा। यह पुस्तक इसी की देन है। उनके साहित्य का सामाजिक सरोकार उन्हें आज भी प्रासंगिक बनाए हुए है।

पुस्तक बहुत दिनों से अधूरी पड़ी हुई थी। इसके प्रकाशन को लेकर मन में उदासी और आलस्य का भाव था। इसे **प्रो. (डॉ.) वीरेंद्र नारायण यादव** की प्रेरणा ने दूर किया। संप्रति वे बिहार विधान परिषद के सदस्य हैं। वे बरावर मुझे कुछ करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। मैं उनके स्नेह का ऋणी हूं।

–जीतेंद्र वर्मा

वर्मा ट्रांसपोर्ट
सीवान-841226 (बिहार)
मोवाइल : 9955589885

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

समर्पण 5

अपनी बात : बरजत रहले बाप-मतारी 6

1. जन्म 8
2. नामकरण 9
3. पढ़ने पर 11
4. छिपकर पढ़ाई 12
5. संगीत का ताल 13
6. बंगाल में 14
7. साहित्य-सृजन 15
8. बिदेसिया 17
9. भाई विरोध 19
10. कलयुग प्रेम 21
11. गबरघिंचोर 22
12. बेटी वियोग 23
13. विधवा विलाप 24
14. गंगा स्नान 25
15. निधन 26
16. भारतीय नवजागरण और भिखारी ठाकुर 27
17. भिखारी ठाकुर और नारी-विमर्श 33
18. फिल्म और भिखारी ठाकुर 41
19. मौलिकता का प्रश्न 42
20. भोजपुरी साहित्य में वृद्धों की स्थिति 44
21. 'बिदेसिया' सबाल्टर्न समाज का स्वर 47

रचना : भिखारी ठाकुर के कुछ गीत 49

www.bhojpurisahityangan.com

जन्म

गंगा नदी के किनारे न जाने कितने छोटे-बड़े गांव बसे हैं। ऐसा ही एक गांव है कुतुबपुर। पहले यह भोजपुर जिले में था। बाद में गंगा ने अपनी धार बदली, तो यह गांव सारण जिले में चला आया। यह गांव चौमुहानी की तरह है। इसके दक्षिण में भोजपुर तथा उत्तर में सारण है। तो पूरब में बलिया तथा पश्चिम में पटना है।

इसी गांव में दलसिंगार ठाकुर नाम के एक नाई रहते थे। उनकी पत्नी का नाम शिवकली देवी था। दोनों सरल स्वभाव के थे। इन्हीं से 18 दिसंबर, 1887 को एक पुत्र का जन्म हुआ। बच्चा देखने में बड़ा सुंदर था। पास पड़ोस की महिलाएं सोहर गाने आईं। घर-आंगन सोहर से गूंज उठा। बच्चे को देखकर सभी खुश थे–

"कितना सुदंर है।"

"बड़ा गोर है।"

"अरे गोर नहीं, धप-धप गोर कहो।"

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

नामकरण

बच्चे की सुंदरता का बखान गांव भर में होने लगा। दूसरे दिन पंडित जी आए। सबने आदर-सत्कार किया। नवजात बच्चे को आशीर्वाद के लिए लाया गया।

"बाबा! बचवा को आशीर्वाद दीजिए।"

पंडित जी ने दूर से ही बच्चे को देखा। बच्चे की सुदंरता देखकर उन्हें खुशी नहीं हुई। उन्होंने कहा–

"बच्चे पर खतरा है। ...ग्रहण है...।"

...सभी घबरा गए। खतरा टालने के उपाय पूछने लगे। पंडित जी गंभीर स्वर में बोले–

"यज्ञ कराना होगा, ब्राह्मण-भोज करना होगा।"

"कितना खर्चा आएगा?"

पंडित जी ने सब बताया। चलते समय बोले–

"देखो, बच्चे को साफ-सुथरा मत रखना। ...और नाम सोच समझ के रखना। ...नहीं तो नजर लग जाएगी।"

"नाम क्या रखा जाए?"

मां ने पूछा।

पंडित के मुंह से श्लोक निकला–

मङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात्क्षत्रियस्य बलान्वितम्।
वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सतम् ॥

(मनुस्मृति, द्वितीयोऽध्यायः, श्लोक 31)

अर्थात् ब्राह्मण का नाम मंगल युक्त, क्षत्रिय का बल युक्त, वैश्य का धन युक्त और शूद्र का निंदा युक्त होना चाहिए।

www.bhojpurisahityangan.com

शर्मवद्ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो रक्षासमन्वितम् ।
वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुतम् ॥

(मनुस्मृति, द्वितीयोऽध्यायः, श्लोक 32)

अर्थात् ब्राह्मण का शर्म युक्त, राजा का रक्षा (वर्मा) युक्त, वैश्य का पुष्टि (गुप्त) युक्त और शूद्र का दास युक्त नाम रखना चाहिए।

तो उनका नाम हुआ भिखारी। उनका बचपन लाड-प्यार में बीता। वे खेलते-कूदते हुए बड़े होने लगे।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

पढ़ने पर

नौ वर्ष की उम्र में वे पढ़ने के लिए विद्यालय गए। माता-पिता की बड़ी इच्छा थी कि वह पढ़े। पढ़कर बड़ा आदमी बने। पर विद्यालय में सभी हंसी उड़ाते–

"अब तुम भी पढ़ने आए हो!"

"तब हजामत कौन बनाएगा!"

"बाप का नाम साग-पात,
बेटा का नाम परोरा[1]।"

"एकदम कलयुग आ गया है!"

"अब धर्म नहीं रहेगा!"

प्रतिवाद करते भिखारी–

"मेरे पढ़ने से तुम लोगों का क्या बिगड़ेगा?"

उत्तर मिलता–

"सब कुत्ता काशी जाएगा,
तो हांड़ी कौन चाटेगा।"

ऐसी अनगिनत बातें वे रोज सुनते। घर पर सबसे कहा। पर माता-पिता विवश थे। वे मन मार कर रह गए। उनका विद्यालय में रहना कठिन हो गया। हार कर उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। लोगों ने राहत की सांस ली–चलो धर्म बचा!

अब वे भैंस चराने लगे।

□□□

1. परवल

www.bhojpurisahityangan.com

छिपकर पढ़ाई

समय-समय पर वे अपने पिता के काम में हाथ बंटाते। पिता लोगों की हजामत बनाते और नेवता-हंकारी बांटते। भिखारी जगह-जगह नेवता लेकर जाते। इस दौरान उन्हें अपना अनपढ़ होना खलता। वे पढ़ना चाहते थे। वे सोचते, कहां जाएं? क्या करें? कैसे पढ़ें...? जो पढ़े-लिखे थे वे उन्हें पढ़ने नहीं देना चाहते थे। पढ़ लेगा तो उनकी हजामत कौन बनाएगा...! उनका दिमाग नाचने लगता।

उनकी दोस्ती भगवानदास से थी। वे दुकानदार थे। भिखारी ने अपनी समस्या उन्हें बताई।

उन्होंने कहा–

"बे मरदे! यह कौन-सी बड़ी बात है। मैं तुम्हें पढ़ना-लिखना सीखाऊंगा।"

"भला वो कैसे?"

"कैसे क्या! जैसे विद्यालय में गुरुजी पढ़ाते हैं। मैं पढ़ा-लिखा हूं।"

"पर बावू साहेब लोग मारेंगे तब...?"

"मैं तुम्हें छिपकर पढ़ाऊंगा।"

"तव ठीक है।"

वे एकांत में पढ़ाते-पढ़ते। जब कोई आता तो कागज-कलम फटाक से झोपड़ी के छान्ही[1] में छिपा देते।

इस तरह से भगवानदास ने उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया।

□□□

1. छत

www.bhojpurisahityangan.com

संगीत का ताल

भिखारी ठाकुर का मन हरदम गीत-संगीत में लगा रहता। वे कोई काम करते, पर उनका मन गीत-संगीत में रमा रहता।

एक दिन की बात है। वे गांव के एक नामी व्यक्ति की दाढ़ी बना रहे थे। वह आंख बंद किए दाढ़ी बनवा रहा था। इधर भिखारी के मन में संगीत की ताल जगी। वे उसकी गाल पर ही तबले की थाप देने लगे। उस व्यक्ति को बड़ा क्रोध आया। वह भिखारी को मारने लगा। हल्ला-गुल्ला सुनकर बहुत से लोग जमा हो गए। सभी भिखारी को भला-बुरा कहने लगे–

"ई बड़ा मनबढ़ुआ है।"

"इसका मन काम में नहीं लगता।"

"गाल पर तबला बजा रहा था।"

"किसी दिन छुरे से गला काट देगा।"

"यही पढ़ने गया था।"

"अब भी छिपकर पढ़ता है।"

"और मारो इसको।"

किसी तरह वे जान बचाकर भागे। अब गांव में उनका रहना कठिन हो गया।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

बंगाल में

वे घर से भाग गए। भागकर बंगाल के मेदनीपुर जिले में गए। उन दिनों बंगाल नवजागरण का केंद्र था। वहां नए-नए विचार फैल रहे थे। ऐसा ही एक विचार था– स्त्री-पुरुष की समानता का।

भिखारी ने देखा कि यहां अभिनय करना अच्छा माना जाता है। यहां महिलाएं भी नाटक में हिस्सा लेती हैं। उन्हें अपने गांव का नाच (नाटक) याद आया। कोई सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं। महिलाएं अभिनय क्या करेंगी, देख भी नहीं सकती हैं। इज्जत चली जाएगी!

भिखारी अपनी जीविका के लिए लोगों की हजामत बनाते। समय मिलने पर वे घूमते, देखते। वहां सब कुछ नया-नया लगता। मन में आंधी सी चलती। कई वर्षों तक घूमते-देखते-सीखते रहे।

वे लौटकर गांव आए। यहां पर मित्रों को जुटाकर नाटक करने लगे। माता-पिता मना करते। कहते नाच करने से इज्जत चली जाएगी।

बरजत रहले बाप-मतारी।
नाच में जनि रहऽ भिखारी ॥

पर वे नहीं माने। नाटक करते रहे। लोगों को उनका अभिनय अच्छा लगता।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य-सृजन

वे सहनशील स्वभाव के व्यक्ति थे। कुछ लोग उन्हें भला-बुरा कहते। कोई-कोई अपमानित करता। पर वे प्रतिकार नहीं करते।

उनकी रचनाओं का स्वर सुधारवादी है। वे कबीर की तरह आक्रामक नहीं हैं। वे नानक की तरह शामक हैं। उन्होंने किसी पर चोट नहीं किया। सिर्फ व्यवस्था की खूबी और खामी को सामने रख दिया।

नारी-जीवन की दुख भरी कथा उनकी रचनाओं के मूल में है। उनकी रचनाएं हैं– बिदेसिया, भाई-विरोध, बेटी-वियोग, विधवा-विलाप, कलयुग प्रेम, राधेश्याम बहार, गंगा स्नान, पुत्र वध, गबरघिंचोर, बिरहा बहार, नकल भांड के नेटुआ, ननद-भउजाई (सभी नाटक), शिव विवाह, भजन-कीर्तन : राम, रामलीला गान, भजन-कीर्तन : कृष्ण, माता भक्ति, आरती, बूढ़शाला के बेयान, चौवर्ण पदवी, नाई बहार, शंका समाधान, विविध, भिखारी ठाकुर–परिचय (स्फुट रचनाएं)।

संत कबीर की तरह भिखारी ठाकुर वाचिक परंपरा के थे। उन्होंने लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए नाटक का सहारा लिया। नाटक के मंचन के दौरान दर्शकों को जमा करने, उन्हें बांधे रखने के लिए वे सचेष्ट रहते थे। अगर दर्शकों का इंतजार करना है तो गीत-गवनई करते रहना है, अगर किसी कारण से नाटक को छोटा करना है तो कौन-कौन सा प्रसंग हटाना है, किस प्रसंग को बढ़ाना है—ऐसी तमाम बातों का वे प्रतिउत्पन्नमतित्व से निर्णय करते थे।

उनके नाटक उनके जीवन काल में ही खूब छपे और बिके। हाबड़ा के सकलिया (पश्चिम बंगाल) का दूधनाथ प्रेस उनकी पुस्तकें छापता और बेचता था। उसमें सिर्फ गीत रहते थे। उनकी पुस्तकों के कई-कई संस्करण प्रकाशित हुए। वे पुस्तकें मोटे-मोटे फोन्ट में पतली-पतली रहती थी। उनमें पाठ भेद रहता था। उनके निधन के बाद उनकी नाट्य मंडली के कहने के मुताबिक उसमें गद्य का भाग जोड़ा गया।

www.bhojpurisahityangan.com

इस लंबे काल के दौरान उनके साहित्य में परिवर्तन भी हुआ। कई जगह मूल स्वर बदल दिया गया। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। 'बेटी वियोग' नाटक में बूढ़े मर्द के साथ ब्याही गई लड़की रोते हुए कहती है–

अगुआ के पूत मरे
बभना के पोथी जरे।

भिखारी साहित्य को लिखने वालों ने इस पंक्ति को हटा दिया।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

बिदेसिया

बिदेसिया नाटक उनके जीवन काल में सर्वाधिक मंचित हुआ। इसका नायक बिदेसी नाम का युवक है। वह गवना कराकर अपनी पत्नी को लाता है। दूसरे ही दिन वह कोलकाता भाग जाता है। कई वर्षों तक न वह घर लौटता है और न ही कोई संदेश भेजता है। उसकी पत्नी तरह-तरह के कष्ट झेलती है। वह एक बटोही से अपने पति के पास संदेश भेजती है।

उधर बिदेसी एक स्त्री के साथ रहने लगा है। उससे दो बच्चे भी होते हैं। बटोही उसे खोजकर उसकी पत्नी का संदेश सुनाता है। बिदेसी पत्नी का समाचार सुनकर दुखी होता है। वह घर लौटना चाहता है, पर कोलकत्ते वाली पत्नी उसे लौटने नहीं देना चाहती है। बटोही उसे घर लौटने के लिए प्रेरित करता है। बड़ी नोक-झोंक होती है।

बिदेसी बेचैन होकर बाहर निकलता है। उसकी पत्नी समझती है कि वह गांव चला गया। बटोही उसे तरह-तरह के प्रलोभन देता है। उसे अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है, पर वह उस पर ध्यान नहीं देती है। वह अपना गहना, कपड़ा समेटकर बच्चों के साथ चल देती है। रास्ते में डाकू उससे सारा सामान छीन लेते हैं।

थोड़ी देर बाद बिदेसी लौटकर घर आता है। अब वह गांव जाना चाहता है। चलने पर मकान मालिक तथा साहूकार उससे अपना रुपया मांगते हैं। नहीं देने पर उसका कपड़ा छीन लेते हैं। वह सिर्फ गमछा पहने गांव की तरफ जाता है।

उसकी गांववाली पत्नी वियोग की अग्नि में जल रही है। एक युवक उसे तरह-तरह का लालच देता है। उसे अपनी ओर आकर्षित करता है। उसके साथ जबरदस्ती भी करना चाहता है, पर वह उसका विरोध करती है।

बिदेसी रात में अपने घर पहुंचता है। पत्नी समझती है कि कोई डाकू आया है। वह दरवाजा नहीं खोलती है। बाद में वह आवाज पहचानती है।

www.bhojpurisahityangan.com

दरवाजा खोलकर पति का स्वागत करती है। दूसरे दिन उसकी कोलकाता वाली पत्नी भी बच्चों के साथ आती है। सभी प्रेम से मिल जाते हैं। इसका अंत सुखांत है।

इसका मूल्यांकन करते हुए जगदीशचन्द्र माथुर ने लिखा है कि, "बूढ़े के ब्याह का कथानक बिहार के 'बिदेसिया' नाटकों में भी विशेष प्रिय रहा है। जैसा बिहार में सर्वविदित है भिखारी ठाकुर की नाट्यशैली का नाम उनके प्रारंभिक नाटक बिदेसिया के आधार पर पड़ा, जिसमें विदेश का अर्थ है कलकत्ता, जहां एक युवती का पति रोजगार के लिए जाता है और अन्य स्त्री के फेर में पड़ जाता है। भोजपुरी-क्षेत्र से अगणित ग्रामीण कलकत्ता में तरह-तरह की नौकरियों के लिए जाते हैं, अतः इस विरहिणी बाला की करुण-कथा मानों सामान्य अनुभूति की प्रतिध्वनि हो गई और चूंकि इसकी अभिव्यंजना सहज, सीधी और मुहावरेदार है, इसलिए थोड़े ही समय में वह स्त्री-पुरुषों के कंठ में व्याप्त हो गई। बिदेसिया के बाद भिखारी ठाकुर ने अनमेल विवाह को अपने नाटकों की विषय-वस्तु बनाया। सामाजिक समस्याओं पर केंद्रित इन नाटकों में संवाद उदात्त और अश्लील इन दोनों के बीच डोलता है। अभिनेता को उपदेशात्मक मुद्रा से वासना-पूर्ण मुद्रा में बदलते क्षण की देर नहीं लगती और दोनों ही रूप में प्रेक्षक मानों उसके इशारे पर नाचते हैं।"[1]

□□□

1. परंपराशील नाट्य, बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद पटना, प्रथम संस्करण-1969, पृ. 44

www.bhojpurisahityangan.com

भाई विरोध

एक गांव में तीन भाई रहते हैं–उपकारी, उपदर एवं उजागर। उपकारी तथा उपदर की शादी हो गई है। उजागर अभी छोटा है। उपकारी के चार बेटे हैं। उपदर की कोई संतान नहीं है।

एक बुढ़िया उपदर की पत्नी को सिखाती है कि वह अलग हो जाए। उपदर की पत्नी पहले इसका विरोध करती है। पर बुढ़िया उसे समझाती है कि बड़े भाई की चार संतानें हैं। उनका खर्च अधिक है। धीरे-धीरे वे बड़े होंगे। उनकी शादी होगी। बहुएं आएंगी। इस तरह उनका खर्च बढ़ते ही जाएगा। तुम सिर्फ पति-पत्नी हो। अलग हो जाओगी तो रुपया बचेगा। काम भी नहीं करना पड़ेगा।

उपदर की पत्नी बंटवारे की जिद पकड़ लेती है। मायके भाग जाने की धमकी देती है। उपदर भाई से अलग नहीं होना चाहता है, पर पत्नी की जिद के आगे झुक जाता है। तीनों भाइयों में बंटवारा हो जाता है। उपदर और उजागर एक में रहते हैं।

बुढ़िया फिर उपदर की पत्नी से मिलती है। इस बार वह उसे अपने देवर उजागर को मरवाने के लिए उसकाती है और बताती है कि इससे वह उसका हिस्सा हड़प लेगी। उपदर की पत्नी उसकी बात मान लेती है। वह अपने देवर पर अपने इज्जत से खिलवाड़ करने का आरोप लगाती है और उसे मार डालने की जिद करती है। उपदर ऐसा ही करता है, पर सच्चाई जानकर उसे पछतावा होता है। वह अपने बड़े भाई उपकारी से सारी बात बताता है। उपकारी और उसकी पत्नी पुकार-पुकार कर रोने लगते हैं।

इसके बाद उपदर की पत्नी गहने की जिद पकड़ती है। इसके लिए उपदर चोरी करता है। चोरी के क्रम में वह पकड़ा जाता है। सिपाही उसकी

www.bhojpurisahityangan.com

पत्नी से कहता है कि अगर वह अपना गहना दे दे तो वह उसके पति को छोड़ देगा। पर वह इनकार कर देती है।

दूसरी तरफ उसके बड़े भाई उपकारी को जब यह सब पता चलता है तो वह उपदर को छुड़ावाकर स्वयं गिरफ्तार होना चाहता है। पर उपदर उसे बेईमान भाई कहता है। अंत में सिपाही उपदर को गिरफ्तार करता है। इसका अंत दुखांत है। इसमें हत्या का दृश्य दिखाया गया है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

कलयुग प्रेम

नशापन से एक घर बर्बाद हो रहा है। पत्नी रो-रोकर अपना दुख कह रही है–उसके पति ने शराब के लिए धन-दौलत, खेत-पथार, यहां तक कि घर का चौखट-दरवाजा तक भी बेच दिया है। कई हफ्तों से घर में खाना नहीं बना है। पति बेटे के एक हाथ का बेरा (एक गहना) छीन लेता है, जो उसकी नानी ने उसे दिया था।

पत्नी जब पति से नशा नहीं करने के लिए कहती है तब वह उसे लाठी से पीटता है। पत्नी का सिर फूट जाता है। तब उसका बेटा उसे समझाता है, पर वह उसे मार डालने की धमकी देता है। नशा करने वाला तर्क देता है कि अरे नशा वही चीज है जिसको खाकर देवों में महादेव हुए। वह अपने बेटे को मारने दौड़ता है। वह भागकर अपनी मां की गोद में छिप जाता है।

इसके बाद भी पत्नी तथा पुत्र उसे तरह-तरह से समझाते हैं, पर वह वहां से उठकर वेश्यालय में चला जाता है। वहां से वह एक वेश्या को लेकर घर आता है। वह उसकी हर बात मानता है। मां-बेटे उससे प्रार्थना करते है कि वह उसे शराब नहीं पीने के लिए समझाए। वे दोनों उसकी गुलामी करेंगे। पर वह इन दोनों का अपमान करती रहती है।

अंत में लड़का कमाने जाता है। पांच वर्ष में बहुत रुपया कमाकर वह घर लौटता है। मां का दुख दूर हो जाता है। इसका अंत सुखांत है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

गबरघिंचोर

गलीज नाम का एक परदेसी पंद्रह वर्ष बाद घर लौटता है। उसकी पत्नी को तेरह वर्ष का पुत्र है। वह पुत्र पर अपना अधिकार जमाता है। उसे अपने साथ ले जाना चाहता है, ताकि उसकी आमदनी बढ़ सके। पर उसकी पत्नी अपने बेटे को अपने से अलग नहीं होने देना चाहती। इसी बीच पुत्र (गवरघिंचोर) का असली पिता गड़बड़ी आ जाता है। वह भी गबरघिंचोर पर अपना अधिकार जमाता है। तीनों में झगड़ा होने लगता है। झगड़े को सुलझाने के लिए पंचायत बैठती है। पंचायत में बड़ी दाव-पेंच आजमाई जाती है। पंच सबकी बात सुनते हैं।

अंत में वे फैसला करते हैं कि गबरघिंचोर को तीन बराबर भागों में काटा जाए और मां, गलीज और गड़बड़ी को एक-एक टुकड़ा दिया जाए। जल्लाद गबरघिंचोर को काटने के लिए आता है। गलीज और गड़बड़ी अपना-अपना हिस्सा लेने के लिए बेताब हैं। पर मां से नहीं रहा जाता है। वह बेटे को काटने का विरोध करती है। अब पंच फैसला करते हैं कि गबरघिंचोर पर मां का अधिकार है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

बेटी वियोग

चटकदेव नाम का व्यक्ति अपनी बेटी की शादी एक बूढ़े आदमी से करता है। बदले में वह रुपया लेता है। इस काम में मध्यस्थता पंडित जी करते हैं। उन्हें रुपयों का लोभ है।

बूढ़े दुल्हे को देखकर सभी उपहास उड़ाते हैं। पर अंततः शादी हो जाती है। शादी के बाद लड़की की भारी दुर्दशा होती है। लड़की भाग कर पिता के घर आती है और रो-रोकर अपना दुख सुनाती है–

रोपेया गिनाइ लिहल, पगहा धराइ दिहल
चेरिया के छेरिया बनवल हो बावू जी

* * * *

बर खोजे चलि गइल, माल लेके घर में धइल
दादा लेखा खोजल दुलहवा हो बावू जी

पीछे से उसका बूढ़ा पति आता है। सभी फिर से लड़की को उसी के साथ भेज देते हैं। यह पारिवारिक संरचना का कड़वा यथार्थ है।

इसमें बेमेल विवाह की समस्या उठाई गई है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

गबरघिंचोर

गलीज नाम का एक परदेसी पंद्रह वर्ष बाद घर लौटता है। उसकी पत्नी को तेरह वर्ष का पुत्र है। वह पुत्र पर अपना अधिकार जमाता है। उसे अपने साथ ले जाना चाहता है, ताकि उसकी आमदनी बढ़ सके। पर उसकी पत्नी अपने बेटे को अपने से अलग नहीं होने देना चाहती। इसी बीच पुत्र (गबरघिंचोर) का असली पिता गड़बड़ी आ जाता है। वह भी गबरघिंचोर पर अपना अधिकार जमाता है। तीनों में झगड़ा होने लगता है। झगड़े को सुलझाने के लिए पंचायत बैठती है। पंचायत में बड़ी दाव-पेंच आजमाई जाती है। पंच सबकी बात सुनते हैं।

अंत में वे फैसला करते हैं कि गबरघिंचोर को तीन बराबर भागों में काटा जाए और मां, गलीज और गड़बड़ी को एक-एक टुकड़ा दिया जाए। जल्लाद गबरघिंचोर को काटने के लिए आता है। गलीज और गड़बड़ी अपना-अपना हिस्सा लेने के लिए बेताब हैं। पर मां से नहीं रहा जाता है। वह बेटे को काटने का विरोध करती है। अब पंच फैसला करते हैं कि गबरघिंचोर पर मां का अधिकार है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

बेटी वियोग

चटकदेव नाम का व्यक्ति अपनी बेटी की शादी एक बूढ़े आदमी से करता है। बदले में वह रुपया लेता है। इस काम में मध्यस्थता पंडित जी करते हैं। उन्हें रुपयों का लोभ है।

बूढ़े दुल्हे को देखकर सभी उपहास उड़ाते हैं। पर अंततः शादी हो जाती है। शादी के बाद लड़की की भारी दुर्दशा होती है। लड़की भाग कर पिता के घर आती है और रो-रोकर अपना दुख सुनाती है–

रोपेया गिनाइ लिहल, पगहा धराइ दिहल
चेरिया के छेरिया बनवल हो बाबू जी

* * * *

बर खोजे चलि गइल, माल लेके घर में धइल
दादा लेखा खोजल दुलहवा हो बाबू जी

पीछे से उसका बूढ़ा पति आता है। सभी फिर से लड़की को उसी के साथ भेज देते हैं। यह पारिवारिक संरचना का कड़वा यथार्थ है।

इसमें बेमेल विवाह की समस्या उठाई गई है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

विधवा विलाप

इसे बेटी वियोग नाटक का दूसरा खंड समझा जा सकता है।

स्त्री (काकी) विधवा हो जाती है। उसका भतीजा कष्ट से जीवनयापन कर रहा था। वह उसे अपने में मिला लेती है। भतीजे को ही घर का मालिक बना देती है। एक दिन काकी एक भिखारी को पैसा दान देती है। इस पर भतीजे की पत्नी आपत्ति करती है। पति-पत्नी में झगड़ा होता है। पत्नी कहती है कि अगर काकी इस घर में रहेंगी तो मैं नहीं रहूंगी।

भतीजा अपने दोस्त से राय लेता है। दोनों मिलकर तय करते हैं कि काकी को तीर्थ कराने ले चला जाए और वहीं छोड़ दिया जाए। वे तीर्थयात्रा पर निकलते हैं। रास्ते में वे काकी को खिला-पिलाकर सुला देते हैं। सोती हुई काकी की वे हथियार लेकर हत्या करना चाहते हैं, तभी वह जग जाती है। वह अपने प्राणों की भीख मांगती है।

इसके बाद वह साधुओं के दल में मिल जाती है और एक आश्रम में रहने लगती है। कृष्ण का भजन गाकर अपना जीवनयापन करती है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

गंगा स्नान

गांव की महिलाएं गंगा स्नान करने जाती हैं। मलेछू की पत्नी भी उसमें है। वह उसे गंगा स्नान करने जाने से मना करता है, पर वह नहीं मानती। मलेछू अपनी मां को भी गंगा स्नान कराने के लिए ले आता है। उसकी पत्नी इसका विरोध करती है। वह कहती है कि मां जाएगी तो मैं नहीं जाऊंगी। दोनों में खूब झगड़ा होता है। पत्नी मायके जाने लगती है। मलेछू उसे मनाता है। वह कहती है कि मैं तुम्हारे साथ तभी रहूंगी जब तुम अपनी मां को पांच लात मारोगे। मलेछू ऐसा ही करता है। उसकी पत्नी तथा उसकी सभी सहेलियां अपना सारा समान मां को ढोने के लिए दे देती हैं।

मेले में एक साधु मिलता है। वह मलेछू की पत्नी को बहकाता है। वह मंत्र द्वारा बेटा पैदा करने का दावा करता है। मलेछू की पत्नी उसकी बातों में फंस जाती है। साधु उसे अपने कहने के मुताबिक चलने के लिए कहता है। वह उसे एकांत में ले जाता है। वहां उसका सारा गहना, कपड़ा आदि छीन लेता है। वह मेले में खो जाती है।

उधर मलेछू की मां मेले में भीख मांगती है। रोती-बिखलती है, फिर थककर जमीन पर सो जाती है।

मलेछू अकेले घर जाता है। उसकी पत्नी खो गई है। वह सोचता है कि मां का अपमान करने के कारण उसे दुख हो रहा है। वह अपनी मां को खोजने निकल पड़ता है।

उसकी पत्नी को भी अपनी गलती का अहसास होता है। वह अपनी सास को खोजती है। अंत में तीनों एक जगह मिलते हैं। मलेछू और उसकी पत्नी मां से माफी मांगते हैं।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

निधन

भिखारी ठाकुर एक महान कलाकार थे। राहुल सांकृत्यायन ने उन्हें अनगढ़ हीरा कहा, तो जगदीशचंद्र माथुर ने उन्हें भरतमुनि की परंपरा में बताया।

वे हर तरह के पात्रों का अभिनय कर लेते थे। यहां तक कि महिला पात्रों का भी। वे जनता के बीच काफी लोकप्रिय थे। उनके नाटकों को देखने के लिए खूब भीड़ इकट्ठा होती थी। लोग उनका नाटक मनोरंजन के लिए देखने आते थे। उनके नाटकों से सिर्फ मनोरंजन ही नहीं होता था, बल्कि संदेश भी मिलता था। स्त्री-अधिकार, बेमेल विवाह, विधवा समस्या, नशापान जैसी कई समस्याएं उन्होंने उठाई हैं।

उन्होंने नाटक के पात्रों का नाम उनके स्वभाव और काम के अनुसार रखा है। पात्रों के नाम से ही उनके चरित्र का अनुमान हो जाता है। उनके पात्रों के नाम पर गौर फरमाएं—बिदेसिया, बटोही, उपकारी, उपदर, उजागर, गलीज, गबरधिंचोर, मलेछू।

उन्हें लंबी उम्र मिली। वे लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचकर उतरे भी। 10 जुलाई, 1971 को उनका निधन हो गया।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

भारतीय नवजागरण और भिखारी ठाकुर

अंग्रेजों के शासनकाल में कूपमंडूक भारतीय समाज का संपर्क आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से हुआ। यहां के सामाजिक जीवन में कई अमानवीय कृत्य, हास्यापद और अवैज्ञानिक परंपराओं को धार्मिक मान्यता प्राप्त थी और आज भी है। अंग्रेजों के शासन के फलस्वरूप ही सती-प्रथा पर प्रतिबंध लगा, विदेश यात्रा को स्वीकृति मिली, स्त्रियों और शूद्रों को शिक्षा मिलनी संभव हो सकी तथा समाजसुधार के ऐसे बहुत से कार्य हुए। यहां यह बात उल्लेखनीय है कि ये सभी बदलाव सिर्फ कानून के बल पर नहीं हुए। इसके पीछे कई समाज-सुधारकों का महान योगदान भी है।

बंगाल सबसे पहले अंग्रेजों के संपर्क में आया। कहा जाता है कि संपर्क से संस्कार बनता है या बिगड़ता है। अंग्रेजों के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से भरा पश्चिमी विचार भी आया, जो बुद्धिवाद, तर्क प्रधान तथा सामाजिक समता के संदेश से भरा था। यही कारण है कि बंगाल में सबसे पहले नवजागरण संभव हो सका। देश के अन्य भागों में जैसे-जैसे पश्चिमी विचारों का प्रचार-प्रसार हुआ वैसे-वैसे ही समाज-सुधार की भावना का बीजांकुरण हुआ। सन् 1829 का वर्ष भारतीय नवजागरण के इतिहास में अविस्मरणीय है। इसी वर्ष वायसराय विलियम बेंटिक ने सती-प्रथा पर रोक लगाने के लिए कड़ा कानून बनाया। जनमानस को सती-प्रथा के विरोध में खड़ा करने में राजा राममोहन राय का सबसे बड़ा योगदान है।

हिंदी क्षेत्र के लेखक सामाजिक कुरीतियों से भरसक आंख चुराते हैं। आर्थिक गैर-बराबरी के खिलाफ तो वामपंथी लेखक लिखते-बोलते हैं, परंतु सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ राहुल सांकृत्यायन जैसे एकाध अपवादों को छोड़ दें तो कोई लिखता-बोलता नहीं है। कहते हैं कि यह सब समय के साथ अपने आप दूर हो जाएगा!

हिंदू समाज में मरने के बाद बड़े धूम-धाम से श्राद्ध करने का प्रचलन है। माता-पिता या बुजुर्ग को जीवन काल में अपनी संतति से उपेक्षा का शिकार

www.bhojpurisahityangan.com

होना पड़ता है, परंतु उनके मरने के बाद उनके सुख के लिए तरह-तरह के उपक्रम होते हैं। ब्राह्मणों को सोने-चांदी से लेकर सभी प्रकार की वस्तुएं दान दी जाती हैं। इस मान्यता के सहारे कि यह सब मृत व्यक्ति को मिलेगा। ब्राह्मणों तथा अन्य लोगों को तरह-तरह के व्यंजन खिलाए जाते हैं। इन सब विधि-विधानों के पीछे भारी खर्च होता है। इस विसंगति की तरफ भिखारी ठाकुर का ध्यान गया। उन्होंने इसकी पोल खोलते हुए लिखा—

जिउता में कुत्ती-कुत्ता, बनिके पतोहू-पूता, कटलन खूब ललकारी।
मुअला पर पिण्डा-पानी, दान होई सोना-चानी, लोग खाई पूड़ी-तरकारी ॥ २

जीते जी माता-पिता की उपेक्षा होती है, परंतु मरने के बाद उन पर आदर उमड़ आता है। जिंदा रहने पर बेटा-बहू कुत्ते की तरह काटते हैं। कुत्ते काटते हैं, परंतु उन्हें ललकार दिया जाए तो और निर्ममता से काटते हैं।

दूसरी पंक्ति (मुअला पर पिण्डा-पानी....) में मरने के बाद होने वाले कर्मकांड और भोज के बारे में सीधे-सीधे कहा गया है। परंतु दोनों पंक्तियों को एक साथ पढ़ने पर मन गहरी करुणा से भर जाता है।

भिखारी ने कहीं कबीर की तरह आक्रमण नहीं किया, किसी को भला-बुरा नहीं कहा। सिर्फ दुख-दर्द को लोगों के सामने रख दिया। वह दुख-दर्द कमोबेश सबका था। कहने का ढंग इतना प्रभावशाली था कि लोग कुछ सोचने और करने को विवश हुए। यही उनकी बड़ी विशेषता है। बेची गई बेटी की करुण-कथा देखकर निर्दयी बाप के हृदय में अपराधबोध का भाव उमड़ा होगा। एक बार, दो बार नहीं, कई-कई बार लोग नाटक देखते। इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। आम आदमी समाज-सुधार की भावना से उनके नाटक देखने नहीं जाते थे, वे जाते थे मनोरंजन के लिए पर अचेतन में ही उन्हें बेटी-बेचवा प्रथा से घृणा होती जाती।

उन्होंने अपने नाटक को हथियार बनाया। कोई भी नियम-कानून तभी लाभकारी हो सकता है जब उसका पालन हो। सिर्फ कानून बना देने से उसका पालन नहीं होता। राजा राममोहन राय सहित कई अन्य समाज सुधारकों ने सती-प्रथा के अमानवीय कृत्य की ओर ध्यान दिलाते हुए इसे बंद कराने की पृष्ठभूमि तैयार की। इसके बाद भी सती-प्रथा पर रोक लगाने के लिए कड़ा कानून बनाकर कठोरता से इसका पालन कराना पड़ा। इसकी तुलना

www.bhojpurisahityangan.com

में भिखारी ठाकुर ने बड़ी सहजता से बेटी बेचवा प्रथा का नाश कर दिया। यद्यपि इसकी एक वजह यह भी हो सकती है कि सती-प्रथा की तुलना में यह प्रथा छोटे क्षेत्र में प्रचलित थी तथा इसे धर्म का पूरा संरक्षण नहीं मिला था। भिखारी ने अपने नाटकों के माध्यम से जनता का हृदय परिवर्तन कर दिया। परंपरागत मूल्यों को, भले ही वे गलत क्यों नहीं हो, त्यागने के लिए व्यापक पैमाने पर लोगों को तैयार करना अपने आपमें ऐतिहासिक कार्य है।

भिखारी के नाटकों के लोकप्रिय होने का एक महत्त्वपूर्ण कारण यह भी है कि उसमें आम आदमी कहीं-न-कहीं अपना चेहरा देख लेता है, अपने परिवेश, परंपरा, विश्वास, संस्कार, खान-पान, पर्व-त्यौहार और मनःसंघर्ष का चित्रण पाता है। बेटी-वियोग में बारात ठीक उसी ढंग से लड़की वाले के दरवाजे पर लगती है जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में होता है। स्त्रियां परिछावन के लिए आती हैं और बूढ़े दुल्हा को देखकर उसका रूप बखानती हैं–

चलनी के चालल दुलहा, सूप के झटकारल हे
दिअका के लागल बर, दुअरे बाजा बाजल हे
आँवा के पाकल दुलहा, झाँवा के झारल हे
कलछुल के दागल, बकलोलपुर से भागल हे
आम लेखा पाकल दुल्हा, गाँव के निकालल हे
आइसन बकलोल बर, चटक देव के भावल हे।[3]

यह गीत भिखारी ने कथा-नाटक में कथानक के अनुसार वातावरण बनाने के लिए स्वयं बनाया है, परंतु इसकी लय और धुन एकदम वही है जो गांवों में दरवाजे पर बारात लगने के समय गाए जाने वाले परंपरागत गीतों की होती है। लोक-जीवन से निकटता का ऐसा उदाहरण उनका पूरा साहित्य है।

उनका नाटक देखने के लिए खूब भीड़ उमड़ती थी। यह भीड़ स्वतःस्फूर्त होती थी। इस संबंध में राहुल सांकृत्यायन का विचार है–

"लोग के काहें नीमन लागेला भिखारी ठाकुर के नाटक। काहे दस-दस पनरह-पनरह हजार के भीड़ होला इ नाटक देखे खातिर। मालूम होत आ कि एही नाटक में पउलिक के रस आवेला। जवना चीज में रस आवे उहे कविताई। केहु के जो लमहर नाक होय अ ऊ खाली दोसे सूघत फिरे त ओकरा खातिर का कहल जाय। हम इ ना कहतानी जे भिखारी ठाकुर के

www.bhojpurisahityangan.com

नाटकन में दोष नइखे। दोष बा त ओकर कारन भिखारी ठाकुर नइखन, ओकर कारन हवे पढ़ुआ लोग। उहो लोग जो अपन बोली से नेह देखावत, भिखारी ठाकुर के नाटक देखत आ ओमें कवनो बात सुझावत इ कुलि दोष मित जाइत। भिखारी ठाकुर हमनी के एगो अनगढ़ हीरा हवे। उनकर में कुलि गुन बा, खाली एने ओने तनी तुनी छोटे के काम हवे।"[4]

(हिंदी अनुवाद) "लोगों को क्यों अच्छा लगता है भिखारी का नाटक। क्यों दस-दस, पंद्रह-पंद्रह हजार की भीड़ होती है इन नाटकों को देखने के लिए। मालूम होता है कि इन्हीं नाटकों में पब्लिक को रस मिलता है। जिस चीज में रस मिले वही कविताई है। किसी की अगर लंबी नाक हो और वह सिर्फ दोष ही सूंघते फिरे तो उसके लिए क्या कहा जाए। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि भिखारी ठाकुर के नाटकों में दोष नहीं है। दोष है तो उसका कारण भिखारी ठाकुर नहीं हैं, उसका कारण पढ़े-लिखे लोग हैं। वे लोग अपनी बोली से स्नेह दिखाते, भिखारी ठाकुर के नाटकों को देखते और उसमें कोई बात सुझाते तो यह सब दोष मिट जाता। भिखारी ठाकुर हम लोगों के अनगढ़ हीरा हैं। उनमें सब गुण है, सिर्फ इधर-उधर थोड़ा तराशने की जरूरत है।"

भीड़ जमा करके उसे अपने मनोनुकूल मोड़ देने की कला उन्हें मालूम थी। उनके नाटकों में परंपरा और परिवर्तन का समन्वय सर्वत्र दिखाई देता है। उनके नाटकों में एक तरफ देवी-देवता की स्तुति, चमत्कार और लोक-जीवन में प्रचलित मान्यता, विश्वास मिलता है तो दूसरी तरफ बेटी बेचवा-प्रथा, विधवा-दुर्दशा, बेमेल विवाह, नशापान जैसी कुरीतियों से होने वाली हानियों से लोगों को अवगत कराया। लोग प्रचलित परंपराओं की आलोचना सुनना, करना नहीं चाहते। भिखारी ने बिना लोक-जीवन के आस्था-विश्वास पर चोट किए कई परंपराओं से उन्हें विमुख कर दिया।

हिंदू समाज में पहले विधवाओं की बड़ी कष्टमय जिंदगी होती थी। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार स्त्री द्वारा पूर्वजन्म में किए गए पाप के कारण पति मर जाता है और वह विधवा हो जाती है। भिखारी की नजर विधवा समस्या पर भी गई। 'विधवा-विलाप' नाटक में उन्होंने इस समस्या की ओर लोगों का ध्यान खींचा।

www.bhojpurisahityangan.com

पहले विधवा हो जाने पर स्त्री के दुख का ओर-छोर नहीं था। सिर मुंडा के रहना, एक समय खाना, खास रंग का कपड़ा पहनना, किसी मंगलकार्य में भाग नहीं लेना, घर के किसी कोने में उपेक्षित होकर पड़े रहना जैसे अनगिनत अमानवीय बंधन थे। सनातन धर्म की व्यवस्था में विधवा हो जाने पर स्त्री का पति की संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं था। इसी कारण विधवा हो जाने पर स्त्री का जीवन कष्टमय हो जाता था। पति के मरते ही स्त्री की न तो मायके में मान-मर्यादा होती, न ससुराल में। इसी सच को भिखारी ने अपने 'विधवा-विलाप' नाटक में चित्रित किया। इसमें पति के नहीं रहने पर औरत को पति का भतीजा तरह-तरह के कष्ट पहुंचाता है।

भिखारीयुगीन विधवा-समस्या काफी हद तक बेमेल विवाह से जुड़ी थी। पिता की उम्र के मर्द से शादी, फिर विधवा और उसके बाद पूरी जिंदगी उपेक्षा, अपमान और घृणा के बीच काटने की विवशता! इन तमाम स्थितियों से गुजरते हुए नारी का असली रूप उनके नाटकों में दिखता है।

आजकल 'गबरघिंचोर' उनका सबसे अधिक मंचित होने वाला नाटक है। इसमें यह स्थापित किया गया है कि संतान पर सबसे अधिक अधिकार मां का होता है। पुरुष प्रधान समाज में यह स्थापना क्रांतिकारी है।

उनके अधिकांश नाटकों में नारी समस्या को उजागर किया गया है। नारी मनोविज्ञान के चित्रण में उन्हें काफी हद तक सफलता मिली है। आज जब विश्वव्यापी नारी मुक्ति का संघर्ष चल रहा है, तब उनकी याद स्वाभाविक है।

नशापान भी एक सामाजिक कुरीति ही है। इसे भी धर्म से जोड़ दिया गया है। गांजा, भांग शंकर का प्रिय आहार माना जाता है। आज भी गांवों में ओझा-गुनी भूत भगाने के लिए देवी-देवताओं को शराब चढ़ाते हैं। भिखारी ने अपने 'कलयुग प्रेम' नाटक में नशा के सेवन करने से होने वाली हानियों को घटनाओं के माध्यम से चित्रित किया है। नशा की लत लगने से व्यक्ति किस तरह अपना कर्त्तव्य, लोक-लाज सब भूल जाता है, परिवार छिन्न-भिन्न हो जाता है– इस सब का यथार्थ चित्रण इस नाटक में मिलता है।

भिखारी ठाकुर की भाषा भोजपुरी है। उनके साहित्य का अधिकांश हिस्सा आज उपलब्ध नहीं है। उनकी किताबें समय-समय पर दूधनाथ प्रेस,

www.bhojpurisahityangan.com

सलकिया, हावड़ा, कोलकाता से प्रकाशित हुई थीं, जो अब लुप्त हो गई हैं। उनके बाद उनका साहित्य, नाट्यमंडली, श्रोता, प्रशंसकों को कंठाग्र था, जो काल के गाल में समा गया।

राहुल सांकृत्यायन ने उन्हें 'अनगढ़ हीरा' की संज्ञा दी, तो जगदीशचंद्र माथुर ने 'भरतमुनि' की परंपरा में बताया है। जबकि भिखारी ठाकुर को 'भोजपुरी का भारतेंदु हरिश्चंद्र' कहना अधिक उचित प्रतीत होता है, क्योंकि वे अपने रूढ़िमुक्त और प्रगतिशील दृष्टिकोण के कारण भारतेंदु के नजदीक हैं।

संदर्भ

1. *भिखारी ठाकुर रचनावली (प्रधान संपादक प्रो. वीरेन्द्र नारायण यादव), विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद, संस्करण द्वितीय, पृष्ठ संख्या-90*
2. *भिखारी ठाकुर रचनावली (प्रधान संपादक प्रो. वीरेन्द्र नारायण यादव), विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद, संस्करण द्वितीय, पृष्ठ संख्या-149*
3. *भिखारी ठाकुर रचनावली (प्रधान संपादक प्रो. वीरेन्द्र नारायण यादव), विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद, संस्करण द्वितीय, पृष्ठ संख्या-77*
4. *स्मारिका, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, तीसरा अधिवेशन-1977, पृष्ठ संख्या-126*

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर और नारी-विमर्श

स्त्री-पुरुष समानता की अवधारणा बिल्कुल नई है। शोषण और अन्याय के अन्य रूपों का कमोबेश हरदम विरोध होता रहा है पर नारी के साथ होने वाले शोषण और अन्याय का विरोध आधुनिक युग की देन है। दुनिया के सभी धर्म, संप्रदाय, मत नारी शोषण को लेकर एकमत रहे हैं। परस्पर विरोधी दृष्टिकोणों में भी इस मुद्दे पर अद्‌भुत विचार साम्य दिखलाई देता है। आधुनिक युग की इस स्थिति के खिलाफ आवाज उठने लगी है। भिखारी ठाकुर के नाटकों में महिलाओं की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत हुआ है। उनके नाटकों में सबसे अधिक चिंता नारी-दुर्दशा को लेकर ही है। उनके पांच नाटकों 'बेटी-वियोग', 'बिदेसिया', 'कलियुग प्रेम', 'विधवा विलाप' और 'गबरघिंचोर' में नारी मुक्ति की कामना खुलकर अभिव्यक्त हुई है। स्त्री और उसके दुख भरे संसार की कहानी हरदम उनके मानस-पटल पर सक्रिय रही। काल और परिवेश को देखते हुए नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण उल्लेखनीय है।

सामाजिक कुरीतियों को धर्म का कवच प्राप्त रहता है। लोक जीवन में वे धर्म का पर्याय मानी जाती हैं। यही वजह है कि गलत लगने पर भी जल्दी कोई उनके खिलाफ सोचने, बोलने और आचरण करने के लिए तैयार नहीं होता। कुछ कुरीतियां ऐसी भी होती हैं जिन्हें शास्त्रीय स्वीकृति नहीं होती, वे तत्कालीन मानसिक, आर्थिक, राजनीतिक व अन्य परिस्थितियों के जरूरत के दबाव के अनुसार बनी और धीरे-धीरे जनसामान्य के जीवन में इतनी मजबूती से जड़ जमा लेती हैं कि परिस्थिति बदल जाने के बाद भी उसका प्रचलन यथावत बना रहता है। ऐसा धर्म के ओट में संभव हो पाता है। भिखारी ठाकुर के युग में एक ऐसी की सामाजिक कुरीति थी– बेटी बेचने की। यह नारी को वस्तु समझने की परंपरागत प्रवृत्ति और बेटी वाले की आर्थिक विवशता से उपजी थी। दहेज की अथाह मांग और बेटी वाले की कंगाली तो आज भी है पर उस समय बेटी बेचने का रिवाज ही

www.bhojpurisahityangan.com

बन गया था। उस समय समाज में जड़ता व्याप्त थी। मानवीय मूल्य अपनी गरिमा खो बैठे थे।

भिखारी ठाकुर ने अपने 'बेटी वियोग' नाटक में बेची गई बेटी का ऐसा हृदयद्रावक चित्र उतारा है कि पत्थर की भी बनी हुई बाप की छाती फट जाएगी। उसका दुख पूरी शिद्दत के साथ इन दो पंक्तियों में व्यक्त हुआ है–

"रोपेया गिनाइ लिहल, पगहा धराई दिहलऽ।
चेरिया के छेरिया बनवलऽ हो बाबू जी ॥"[1]

बेची गई बेटी अपनी स्थिति बकरी या अन्य पालतु पशुओं की तरह पाती है, जिन्हें मनचाही रकम देने वाले को सौंप दिया जाता है। पगहा उस रस्सी को कहते हैं जिसमें पशु बंधा रहता है। पशु बेचने के बाद उसका मालिक नए मालिक को उसका पगहा पकड़ा कर औपचारिक रूप से अधिकार का हस्तांतरण करता है।

हिंदू संस्कृति में बेटी को गाय माना जाता है। उसे जिस खूंटे में मन हो बांध दीजिए, वह बोलेगी नहीं और बोलेगी कैसे? बोलेगी तो धर्म न टूटेगा!

शादी के बाद बेची गई बेटी की दुर्गति का मार्मिक चित्र इस नाटक में देखा जा सकता है। बेची गई बेटी भागकर मायके आती है और पिता से अपना दुख सुनाती है–

"दुलहा नब्बे बरिस से कम, बानी नव के दूना हम,
नाहक भइल सेन्दुर-दान। करिलऽ कान, करिलऽ कान...
जब हम होखब मस्त जवान, बालम सुतिहन चादर तान
खटिया पहुंची घाट मसान। करिलऽ कान, करिलऽ कान..."[2]

पिता से अधिक उम्र के साथ ब्याही गई लड़की को ससुराल में रहना कठिन हो गया। वह भाग कर मायके आती है। पर तमाम सहानुभूतियों के बावजूद बेटी को रखने के लिए मां-बाप तैयार नहीं हैं। पंच भी विदाई करने के लिए ही कहते हैं। हिंदू समाज में परंपरागत मान्यता यही रही है कि शादी के बाद ससुराल ही बेटी का घर हो जाता है। मायके में वह मेहमान बनकर रह जाती है। भिखारी ठाकुर ने अपने नाटकों का ताना-बाना ऐसे ही सामाजिक-पारिवारिक मान्यताओं से बुना है। उपरोक्त स्थिति किसी एक नारी की नहीं होकर बूढ़े मर्द के साथ ब्याही गई सभी नारियों की है।

www.bhojpurisahityangan.com

बेमेल विवाह कई समस्याओं को जन्म देता है, जिसमें विधवा समस्या महत्त्वपूर्ण है। भिखारी ठाकुर ने इस समस्या को 'विधवा विलाप' नामक नाटक में उठाया है। हिंदू समाज में पहले विधवाओं की बड़ी सांसत भरी जिंदगी होती थी। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार स्त्री के पूर्वजन्म में किए गए पाप की वजह से उसका पति मर जाता है और वह विधवा हो जाती है। पहले विधवा हो जाने पर स्त्री के दुःखों का ओर-छोर नहीं था। सिर मुड़ा कर रहना, एक समय खाना, सफेद रंग का साधारण कपड़ा पहनना, शृंगार से दूर रहना, किसी मंगल कार्य में भाग नहीं लेना, घर के किसी कोने में उपेक्षित होकर पड़े रहना—जैसे अमानवीय बंधन थे। हिंदू समाज की परंपरागत व्यवस्था में स्त्री का पिता या पति की संपत्ति पर अधिकार नहीं था। बचपन में पिता, जवानी में पति और बुढ़ापे में पुत्र के अधीन रहने का धार्मिक आदेश था। अमीर घरों में भी पति के मरने के बाद स्त्री की स्थिति नौकर-चाकर से भी बदतर हो जाती थी। अगर उसे कोई संतान, उसमें भी पुत्र नहीं हो तो शायद ही उसकी कोई दुर्दशा बाकी बचती थी। सारी संपत्ति के बाद विधवा दो सूखी रोटी के लिए मोहताज हो जाती थी। कहीं आश्रम में, कहीं कोठे पर, कहीं देवदासी बनकर पेट पालने के लिए विवश कर दी जाती थी। सबसे विडंबनापूर्ण स्थिति उस समय आती थी जब जीवन काल में कोई संबंध नहीं रखने वाले भाई-भतीजे मरने के बाद सारी संपत्ति के हकदार हो जाते और पत्नी को उनके दया के भरोसे जीना पड़ता था। प्रेमचंद ने इस करुण कथा को 'गबन' में रतना के माध्यम से उठाया है। 'विधवा विलाप' में तत्‌युगीन विधवाओं की दयनीय स्थिति का चित्रण प्रस्तुत हुआ है।

यह 'बेटी वियोग' नाटक का दूसरा खंड लगता है। स्त्री (चाची) विधवा हो जाती है। उसका भतीजा गरीब है। वह कष्ट से जीवनयापन कर रहा है। वह उसे अपने में मिला लेती है और उसे ही घर का मालिक बना देती है।

एक दिन चाची भिखारी को कुछ पैसे दान में देती है। इस पर भतीजे की पत्नी आपत्ति करती है। पति-पत्नी में झगड़ा होता है। पत्नी कहती है कि अगर चाची रहेंगी तो मैं इस घर में नहीं रहूंगी।

भतीजा अपने दोस्त से राय लेता है। दोनों मिलकर तय करते हैं कि चाची को तीर्थ कराने के बहाने ले चला जाए और वहीं छोड़ दिया जाए।

www.bhojpurisahityangan.com

वे तीर्थ यात्रा पर निकलते हैं। रास्ते में काकी (चाची) को खिला-पिलाकर सुला देते हैं और स्वयं उसकी हत्या करना चाहते हैं, तभी वह जग जाती है। वह अपने प्राणों की भीख मांगती है। इसके बाद वह साधुओं के दल में मिल जाती है। वह एक आश्रम में भजन गाकर गुजारा करती है।

उस युग में विधवाओं की यही नियति थी। ततुयुगीन विधवा समस्या काफी हद तक बेमेल विवाह से जुड़ी थी। पिता के उम्र के मर्द से शादी, फिर विधवा और उसके बाद की जिंदगी उपेक्षा, अपमान और घृणा से बीच जीने की विवशता—इन तमाम स्थितियों से गुजरती हुई नारी की तस्वीर उनके नाटकों में मिलती है। 1956 में तत्कालीन विधि मंत्री डॉ. भीमराव आंवेडकर के प्रयासों के फलस्वरूप हिंदू कोड बिल पारित हुआ। इसमें स्त्रियों को संपत्ति पर (सीमित मात्रा में ही सही) अधिकार मिला। इसके बाद से विधवाओं के उत्पीड़न में कमी आई।

आभूषण का निषेध

आभषूण नारी के पिछड़ेपन का एक महत्त्वपूर्ण कारण रहा है। पुरुष समाज द्वारा निर्मित मूल्यों ने नारी को आभूषण प्रेमी बना दिया। उनका ध्यान अधिक-से-अधिक आभूषण पहनने पर लगा रहता है। फलस्वरूप वे जीवन संग्राम की वास्तविक शक्ति से वंचित रह जाती हैं। इस बात को विश्व की पहली नारीवादी योद्धा मेरी वाल्स्टन क्राफ्ट ने समझा। उन्होंने आभूषण आदि के प्रति नारियों के प्रेम को स्वघाती बताया। 1792 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'ए विंडिकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वीमेन' (स्त्री-अधिकारों का औचित्य-साधन) में उन्होंने स्त्रियों से अपने देह को सजाने की चिंता छोड़कर उसमें अंतर्निहित क्षमता को सामने लाने तथा स्वयं को नए दृष्टिकोण के साथ जीवन जीने को कहा। इसके आगे उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा—"मैं चाहती हूं कि स्त्रियों को, मस्तिष्क और काया—दोनों में दृढ़ता अर्जित करने के प्रयास हेतु प्रेरित कर सकूं और उन्हें विश्वास दिला सकूं कि हृदय की भावुकता, भावनाओं की कोमलता और परिष्कृति अभिरुचि जैसी नाजुक बातें निर्वलता के विशेषणों की प्रायः समानार्थी हैं और वे स्त्रियां जो सिर्फ दया और दया-सरीखा प्रेम जगाती हैं, शीघ्र ही तिरस्कार की पात्र बन जाएंगी।"[3]

www.bhojpurisahityangan.com

आभूषण स्त्रियों के लिए अभिशाप किस तरह है? इस पर संजीव आनंद ने बड़े तार्किक ढंग से विचार किया है–

"आरंभ से ही यह देखा गया है कि स्त्री के लिए जितने सौंदर्य-विधान या सामाजिक-व्यवहार के लिए आचार-शास्त्र का निर्माण कराया गया है उस अनुपात में पुरुषों के लिए यह 'न' के बराबर है। स्त्री का कोई भी ऐसा अंग नहीं है जिसके लिए आभूषण का विधान न हो। सिर से लेकर पैर तक आभूषणों से लदे रहना, उनकी अंतिम गरिमा मान ली गई है। जैसे पांवों के लिए पायल, सूत, बिछिया, झांझ या मोटा कड़ा, कमर के लिए बंध-करधनी-बिछुआ, बांहों के लिए चूड़ियां, कंगन, अंगूठी, गर्दन के लिए हंसुली, हार, जंजीर, सुतिया, हमेल, कानों के लिए झुमका, बाली, टाप्स, बुंदा, नाक के लिए नथ, बुताक, लौंग, फूल, नथनी, सिर के लिए शीशफूल, कांट व केशचेन।

प्रश्न उठता है कि आखिर वह कौन-सा कारण रहा होगा जिसके चलते स्त्रियों को इस प्रकार आभूषणों से लाद दिया गया? यह तो नहीं कि पुरुष तो स्वयं स्वतंत्र होकर या मुक्त होकर सर्वत्र विचरण करते रहें, परंतु स्त्रियों को आभूषणों व अन्य प्रसाधनों के खूंटे से बांधे रखा जाए?

दरअसल अब यह मान लिया गया है कि पुरुषों की मानसिकता स्त्रियों की अपेक्षा अधिक विलासी और सामंती होती है। वह वश में करना और भोग करना अधिक पसंद करता है। अपेक्षाकृत स्त्रियों के, वह शारीरिक रूप से ज्यादा बलशाली भी होता है। पुरुषों की इस मानसिकता के कारण को प्राचीन समय से ही चली आ रही हमारी रूढ़ वर्ण-व्यवस्था से जोड़कर देखा गया है–जहां स्त्रियों को भी शूद्रों की ही भांति हेय समझा गया है। आर्य-ग्रंथों में तो इस तरह के अनेक प्रसंग मिलते हैं। उनके ब्राह्मण ग्रंथ स्त्रियों और शूद्रों को उपेक्षित करके चलने के लिए कुख्यात हैं, हालांकि हमारे यहां स्त्रियों को देवी, माता या फूलों की मलिका के रूप में भी देखा गया है, मगर इसके पीछे के मनोवैज्ञानिक कारणों पर दृष्टिपात किया जाए तो पता चलता है कि इस तरह के विशेषण या संबोधन स्त्रियों के व्यवहार को निष्क्रिय बनाने के लिए दिए जाते रहे हैं। आभूषण पहनाने के पीछे एक हद तक यही कारण रहे हैं। इससे स्त्रियों का दिल बड़ी आसानी से जीता जाता है। दूसरा इससे पुरुष के मानसिक उपभोक्तावाद को पुरजोर

www.bhojpurisahityangan.com

बढ़ावा और संतुष्टि मिलती है। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि यह आभूषण रूपी डोर या रस्सी स्त्री के शरीर रूपी वस्तु को काफी मजबूती के साथ जकड़कर रखती है। स्त्रियां चाहकर भी चुपचाप इन आभूपणों को पहनकर गुपचुप भाग नहीं सकतीं।

प्रायः यह देखा गया है कि स्त्रियों के जितने भी आभूषण होते हैं– सभी से आवाज निकलती है। कुछ आभूषण तो चमकते भी हैं। यानी ये आभूषण स्त्रियों की शारीरिक उपस्थिति का अहसास कराते रहते हैं। जैसे किसान आमतौर पर अपने बैलों या गायों के गले में घंटी पहना देते हैं, जिससे पता चलता रहे कि उसका जानवर कहां है और अगर वह भागता भी है तो उसे आसानी से खोजा जा सके। कल्पना करें कि जिस तरह जानवरों की नाक में कृषक 'नथ' इसलिए पहनाते हैं, ताकि जब वह अधिक उच्छृंखल हो जाए तो 'नथ' पकड़कर उसे कष्ट देने के साथ आसानी से सुधारा जा सके। निश्चय ही स्त्रियों की 'नथनी' या 'चोटी' की अवधारणा इससे भिन्न नहीं है। प्रताड़ना के समय यह इत्तेफाक नहीं है कि सबसे पहले पुरुषों के हाथ में चोटी ही आती है।"[4]

भिखारी ठाकुर ने अपने दो नाटकों 'भाई विरोध' और 'पुत्र वध' में स्त्रियों के आभूषण प्रेम से होने वाली हानियों को दर्शाया है।

'पुत्र वध' नाटक का पूरा कथानक आभूषण प्रेम पर आधारित है। ग्रामीण और अशिक्षित नारियों में यह प्रेम कुछ ज्यादा ही रहता है। इस नाटक में पत्नी का सारा ध्यान गहना पाने पर ही लगा रहता है। पति की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वह गहना बनवा सके। पति-पत्नी में हरदम झगड़ा होता रहता है। पत्नी गहने के पीछे पागल है। गहने के लालच में वह एक आभूषण बेचने वाले के नजदीक आ जाती है। जब उसका पति घर में नहीं रहता है तब वह आता है। साथ में तरह-तरह के गहने लाता है।

उसका सौतेला बेटा उसे देख लेता है। वह अपनी सौतेली मां से उसके बारे में पूछता है। भंडा फूटने की आशंका से दोनों डर जाते हैं। पत्नी एक षड्यंत्र रचती है, वह पति से कहती है कि उसका बेटा मेरी इज्जत से खेलना चाहता है, पति क्रोध में अपने बेटे की हत्या कर देता है।

www.bhojpurisahityangan.com

'भाई विरोध' नाटक में भी आभूषण प्रेम के नकारात्मक पहलू को दिखाया गया है। पत्नी पति से गहना लाने की जिद करती है। पति के पास रुपए नहीं हैं। वह चोरी करता है और पकड़े जाने पर पुलिस उसे जेल भेजती है।

भिखारी ठाकुर की शिक्षा-दीक्षा को देखते हुए आभूषण के प्रति उनका दृष्टिकोण सुखद आश्चर्य पैदा करता है। आमतौर पर लेखक आभूषण को महिमामंडित करते ही नजर आते हैं। उनके दृष्टिकोण के निर्माण में उनके कोलकाता प्रवास ने बड़ी भूमिका अदा की। कोलकाता भारतीय नवजागरण का केंद्र था। वहां से उन्होंने बहुत कुछ सीखा।

नारी दुर्दशा के विभिन्न पक्ष

भिखारीयुगीन समाज में पुरुष द्वारा कई शादियां करने का प्रचलन था। अधिकांश नाटकों में नायकों की दो पत्नियां हैं। उनकी नारी स्वावलंबी नहीं है। वह पिता, पुत्र पर आश्रित है। 'बिदेसिया' में वह पति के लिए तड़पती है। इस नाटक में ग्रामीण महिला और शहरी महिला के दृष्टिकोण और रहन-सहन में अंतर दिखलाई देता है। गांव वाली पत्नी पति के लिए रोती, तड़पती है, प्रत्येक राही से पति को संदेश भिजवाती है। पर शहर वाली पत्नी यह सब करने की जगह पति के घर का पता पूछते उसके घर आकर रहने लगती है।

'कलयुग प्रेम' में पत्नी का सारा ध्यान नशेड़ी पति को सुधारने में लगा रहता है। इसके लिए वह तरह-तरह का कष्ट झेलती है। अंत में बेटे के कमाने लगने पर उसे सुख नसीब होता है। पुरुष द्वारा नशापान करने से पारिवारिक ताना-बाना बिखरने लगता है। घर में चूल्हा नहीं जलता, बच्चा बीमार है इसके लिए पैसा नहीं है पर पति पीएगा जरूर, इसके लिए पैसे की कमी नहीं होगी। जेब में पैसा नहीं है तो भी कोई बात नहीं है। पत्नी का गहना, जमीन, घर बेचकर पीएगा। ऐसी स्थिति में सबसे अधिक यंत्रणा स्त्री को उठानी पड़ती है। इस यंत्रणा से गुजरती नारी का चित्रण इस नाटक में मिलता है। नशापान को धर्म से जोड़ दिया गया है। गांजा, भांग शंकर का प्रिय आहार माना जाता है। आज भी ओझा-गुनी भूत भगाने के देवी-देवताओं को शराब चढ़ाते हैं। भिखारी ठाकुर ने समाज को बहुत

www.bhojpurisahityangan.com

नजदीक से देखा था। उन्हें इन स्थितियों की अच्छी समझ थी। नशापान की मनाही करने पर नायक अपना अकाट्य (कु) तर्क प्रस्तुत करता है—

"अरे नशा वही चीज है, जिसको खाकर देवों में महादेव हुए"[5]

नशेड़ी आज भी ऐसे (कु) तर्क देते हैं। इसके खिलाफ बोलने का मतलब धर्म का विरोध करना समझा जाता है। लोग धर्म का विरोध करने से बचते हैं।

संप्रति 'गबरघिंचोर' उनका सबसे अधिक मंचित होने वाला नाटक है। इसमें यह स्थापित किया गया है कि संतान पर पिता की अपेक्षा मां का अधिकार अधिक होता है। आज के नारीवादी आंदोलन की एक मांग यह है कि स्त्री अपने संतान के लिए बीज का चुनाव स्वयं करे। उसके साथ यह बाध्यता नहीं हो कि वह पति नाम के पुरुष के बीज से ही संतान उत्पन्न करे। इस नाटक में स्त्री अपने पति की जगह दूसरे पुरुष से अपने संतान की रचना करती है। उसका पति संतान पर अपना अधिकार जमाता है। वह उसका विरोध करती है। पंचायत बैठती है। सारी बातें खुलकर सामने आती हैं। अंत में पंचायत बच्चा मां को सौंपने का फैसला सुनाती है। यह एक क्रांतिकारी स्थापना है।

उन्होंने नारी समस्या को स्वर दिया है। नारी मनोविज्ञान के चित्रण में उन्हें सफलता मिली है। आज विश्व भर में नारी मुक्ति के लिए आंदोलन चल रहे हैं। ऐसे में उनके नाटकों की प्रासंगिकता बढ़ जाती है।

संदर्भ

1. *भिखारी ठाकुर रचनावली (प्रधान संपादक प्रो. वीरेन्द्र नारायण यादव), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद संस्करण द्वितीय, पृष्ठ संख्या-90*
2. *भिखारी ठाकुर रचनावली (प्रधान संपादक प्रो. वीरेन्द्र नारायण यादव), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद संस्करण द्वितीय, पृष्ठ संख्या-93*
3. *स्त्री-अधिकारों का औचित्य-साधन, पृष्ठ संख्या-29*
4. *आभूषण : सौन्दर्य का उत्पीड़क पक्ष, 'आजकल', जुलाई, 1994, पृष्ठ संख्या-21*
5. *भिखारी ठाकुर रचनावली (प्रधान संपादक प्रो. वीरेन्द्र नारायण यादव), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना, संस्करण द्वितीय, पृष्ठ संख्या-110*

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

फिल्म और भिखारी ठाकुर

जन-साधारण में एक धारणा व्याप्त है कि भिखारी ठाकुर के नाटक 'बिदेसिया' पर फिल्म बनी है, पर यह सत्य नहीं है।

दरअसल एस.एन. त्रिपाठी ने 'बिदेसिया' नाम की भोजपुरी फिल्म बनाई। इसमें भिखारी ठाकुर से एक छोटा-सा अभिनय भी कराया गया तथा उनका एक गीत भी गवाया, परंतु यह फिल्म उनके नाटक 'बिदेसिया' की कहानी पर नहीं बनी है। इसकी अलग कहानी है।

यह फिल्म 1963 में बनी। उस समय भिखारी ठाकुर की प्रसिद्धि शिखर पर थी। एस.एन. त्रिपाठी ने उनका नाम भुनाने के लिए उनके नाटक के नाम पर अपनी फिल्म का नाम रखा और मात्र मार्ग-व्यय देकर उनसे अभिनय भी करा लिया। पोस्टर पर भिखारी ठाकुर की तस्वीर देकर इस तरह आभासित हुआ कि फिल्म उनके नाटक पर आधारित है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

मौलिकता का प्रश्न

इधर कुछ लोगों ने कहना शुरू किया है कि 'बिदेसिया' भिखारी ठाकुर के पहले से प्रचलित थी, यह परंपरा है, यह शैली है। भिखारी ठाकुर का फलाना नाटक, फलाना गीत चिल्लाने का है, इत्यादि। ऐसी बातों का कोई लिखित-छपित प्रमाण नहीं है। उपर्युक्त सब बातें उनका महत्त्व कम करने के लिए कही जा रही हैं। असल में इन लोगों को लगता है कि पिछड़ी जाति से आने वाला व्यक्ति इतना प्रतिभावान कैसे हो गया। इतनी प्रतिभा को किसी-न-किसी तरह कथित ऊंची जाति से जोड़ दिया जाए। ऐसी ही मानसिकता ने कबीर को विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न बता दिया।

भिखारी ठाकुर के द्वारा 'बिदेसिया' के प्रस्तुति का अंदाज मौलिक है। यह बहुत पुरानी और सर्वमान्य बात है कि एक ही कथा या तथ्य को अलग-अलग लेखक अपने-अपने ढंग से कहते हैं और सभी लेखकों की बात अपनी होती है। रामकथा इसका सुलभ उदाहरण है। कहा गया है कि महान रचना की कथा हम जानते हैं, परंतु उसे बार-बार पढ़ने-सुनने-देखने का मन करता है। इसके मूल में प्रस्तुति का अंदाज ही होता है।

भिखारी ठाकुर को महान रचनाकार की तरह संकटपूर्ण स्थलों की पहचान थी। वे जानते थे कि किसी प्रसंग को कितना खींचना है। 'गबरघिंचोर' नाटक में बेटे पर पति का अधिकार हो या पत्नी का अधिकार हो इसको लेकर चलने वाली पंचायत के दृश्य को उन्होंने लंबा खींचा है। यह संकटपूर्ण स्थल है। पंच किसके पक्ष में फैसला सुनाएंगे?—यह जिज्ञासा पाठक-दर्शक को बांधे रखती है। पंचायत में तर्क-वितर्क रोचक ढंग से होता है। इस दौरान जो उपमा-उपमान, प्रतीक-बिंब दिए जाते हैं वे गंवई वातावरण से लिए गए हैं।

www.bhojpurisahityangan.com

उनका संकट प्रकाशन या प्रचार का नहीं है। उनका असली संकट आभिजात्य एवं आकादमिक जगत में मान्यता को लेकर है। उनके नाटकों को 'भिखरिया के नाच' कहकर अपमानित किया जाता है। उनके माटकों को कभी गंवारू, कभी अश्लील तो कभी लोक साहित्य कहकर उसका महत्त्व कम करने का प्रयास किया जाता है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्य में वृद्धों की स्थिति

(भिखारी ठाकुर, लोककथा और उषा वर्मा)

भिखारी ठाकुर ने अपने समय और समाज को सीधे देखा था। उनके पास किसी भारतीय या विदेशी दृष्टि का आग्रह नहीं था। यही वजह है कि उन्होंने हमारे समाज के कई कड़वे यथार्थ को सामने रखा है। उनके साहित्य में वर्णित बेटी-बेचना, बेमेल विवाह, संपत्ति के लालच में अपने परिवार की महिला की हत्या करना जैसी कई बातें हमारे समाज के कड़वे यथार्थ को उजागर करती हैं।

'बुढ़शाला के बेयान' उनकी चंपू शैली में लिखित रचना है– इसकी गिनती उनकी चर्चित रचनाओं में नहीं होती है, परंतु इससे उनके दृष्टिकोण का पता चलता है, इसमें उनकी परिकल्पना पश्चिम के 'ओल्ड एज होम' से मिलती-जुलती दिखती है। इसमें वृद्धों की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए वे उनके लिए अलग घर बनवाने का सुझाव देते हैं। भारतीय संस्कृति के कुछ स्वयंभू ठेकेदार ओल्ड एज होम को पश्चिमी संस्कृति की देन बताते हुए भारत में इसकी जरूरत को नकारते हैं, परंतु समाज को विना किसी आग्रह के देखने वाले भिखारी ठाकुर ने यहां पर भी इसकी जरूरत महसूस की।

'बुढ़शाल के बेयान' छोटी सी रचना है, लगभग चार पृष्ठों की। परंतु इसमें वृद्धों की दयनीय स्थिति के कई मार्मिक प्रसंग आए हैं–

"यदि बुढ़ एक दफे से दूसरा दफे पूछलन कई बबुआ– बहु खाय के भइल, त ई सुनी के पतोह कहत बाडी– आह बाबा आह बाबा। हांड़ी दलदला गइल।"

"तबले बेटा आ गइलन। पुछतारन का भइल हा रे।"

"पतोह कहत बाडी जे का भहल का। कएक दफे पूछलन खाएक भइल। खाए का होई, त हमहीं खाइब कि बाबुसाहेब खइहन।"

www.bhojpurisahityangan.com

"बेटा– अरे आदमी हवन कि कुत्ता।"

"बाप– 'हम कुत्ता कइसे हइ, भूख नु लागल बा।"

"बेटा– और भूख के नाती। सोझा से चल जो ना त मार मुकन के पीठ गुल-गुल कर देबि।"

"बाप दोबर धोती ओढ़ के अंगना से दुआरा पर सूत के रोवत बाड़न, बेटा का कान्ह पर अलवान झुलत बा। बाप धोती का तरे लोर पौछत बाडन। केहू से कहत नइखत, काहेंकि ई बात कहव, त छबड़ा जान जाई, घर में रहल दुलुम हो जाई। लडिका कहत बाडन स कि बाबा एगो कथा कह। बाबा का कथा लउकत बा कि, बाबा के ऊ दिन लउकत बा, जेह दिन एही लडिका खातिर महाजन के दुआर अगोर ले रहलन। अगर महाजन (एक) रुपया देलन, त पंद्रह आना के खरची वो एक आना के मिठाई ले अइलन कि बबुआ बड होईहन, त इमरा के सुख दीहन। से बबुआ के अब ई बोली सुनि के मन में गुनि-गुनि के रोवत बाडन।"[1]

मन में एक प्रश्न उठता है कि प्राचीनकाल में भारतीय समाज में वृद्धों की स्थिति कैसी थी? कुछ लोगों के मुताबिक तो प्राचीनकाल आदर्शकाल था। उस समय सब कुछ सर्वोत्तम था। इस प्रश्न का उत्तर एक लोककथा के माध्यम से जान सकते हैं। लोककथा के पुरातन होने में कोई संदेह नहीं होना चाहिए।

लोककथा में एक व्यक्ति अपने वृद्ध पिता को दूर नदी के एक घाट पर मध्य रात्रि को छोड़ने की योजना बनाता है, उस व्यक्ति का पुत्र भी अपने दादाजी के साथ जाने की जिद पकड़ लेता है। हल्ला होने के डर से वह उसे भी साथ ले लेता है। एक घाट पर जब व्यक्ति अपने पिता को छोड़ता है तो वृद्ध व्यक्ति कहता है कि मुझे अगले घाट पर छोड़ो। इस घाट पर मैंने अपने पिता को छोड़ा था। अगले घाट पर व्यक्ति अपने वृद्ध पिता को छोड़कर जाने लगता है तो रास्ते में उसका अबोध पुत्र कहता कि पिताजी मैं आपको अगले घाट पर छोडूंगा।

इसी भावभूमि पर उषा वर्मा की एक कहानी है 'बखरा'।[1] भोजपुरी में बखरा हिस्से को कहते हैं। यह कहानी मध्यम वर्ग की है। एक व्यक्ति के दो बेटे हैं। दोनों नौकरी में हैं। बंटवारे में एक के हिस्से में मां आती है

www.bhojpurisahityangan.com

ओंर दूसरे के हिस्से में पिता। एक दिन मां अपने हिस्से की रोटी छिपाकर पिता को देती है पर पकड़े जाने पर बेटा-बहु ऐसा करने से रोकते हैं। बेटा कहना है कि अब ऐसा करोगी तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।

इस कहानी का अंत बड़ा मार्मिक है। बच्चे अपने दादा-दादी का हिस्सा लगते देखते हैं और अपने भविष्य की योजन बनाते हैं। मां मेरे हिस्से में रहेंगी, पिता तुम्हारे हिस्से में।

भोजपुरी के बहुत से रचनाकार अपनी रचनाओं में वृद्धों की स्थिति का चित्रण कर रहे हैं।

संदर्भ

1. *भिखारी ठाकुर रचनावली (प्रधान संपादक प्रो. वीरेंद्र नारायण यादव), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पृ. 259-260*
2. *लाइची (कहानी संग्रह), भोजपुरी संस्थान, पटना, पृ. 39*

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

'बिदेसिया' सबाल्टर्न समाज का स्वर

चंद्रशेखर एक प्रतिभावान लेखक थे। उनकी राजनीतिक सक्रियता और हत्या के शोरगुल में उनका यह पक्ष अभी तक अनदेखा सा रह गया है। हालांकि उनके जीवनकाल में उनकी कई रचनाएं प्रकाशित हुई और सुधी पाठकों का ध्यान उनकी तरफ गया भी। उनकी हत्या के कुछ ही दिनों पहले भिखारी ठाकुर पर उनका लेख अंग्रेजी अखबार 'द पायनेयिर' में प्रकाशित हुआ था। इसे पढ़कर आलोचक मैनेजर पांडेय ने कहा था कि यह भिखारी ठाकुर पर अब तक हुए लेखन में सबसे स्तरीय है। हाल में ही उनकी पुस्तक प्रकाशित हुई– 'लोकप्रिय संस्कृति का द्वंद्वात्मक समाज शास्त्र संदर्भ बिदेसिया'। यह जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के राजनीति शास्त्र विभाग के अंतर्गत एम.फिल. का शोध कार्य है, परंतु परंपरागत शोधकार्यों की तरह ऊबाऊ या बोझिल नहीं है। इसमें उद्धरणों के भरमार के बावजूद रचनात्मकता का आस्वाद है।

इस पुस्तक से चंद्रशेखर के लेखकीय पहचान को मजबूती मिलती है। उनके शहादत के कुछ ही महीनों बाद उनको श्रद्धांजलि स्वरूप प्रकाशित पुस्तक 'नई पीढ़ी का नायक' में उनके पत्र, कविता, टिप्पणी, डायरी अंश, लघुकथा तथा कहानी प्रकाशित हुई थी। वर्षों बाद मुझे उनकी कहानी की हस्तलिखित प्रति मिली, जिसे संपादित कर मैंने 'हंस' (नवंबर, 2002) में 'कुतिया' शीर्षक से प्रकाशित कराई। इस कहानी की प्रतीकात्मकता एवं मानवीय संवेदना ने सबका ध्यान आकृष्ट किया।

भिखारी ठाकुर के प्रतिनिधि नाटक 'बिदेसिया' को आधार बनाकर लिखी गई इस पुस्तक में लोकप्रिय संस्कृति, बिदेसिया शैली के उद्भव और विकास तथा भिखारी ठाकुर के नाटकों का विवेचन विश्लेषण हुआ है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में सबाल्टर्न समाज के उभार ने जीवन के अन्य क्षेत्रों की तरह साहित्य के मानदंड को भी बदला है। अब साहित्य में उच्च

www.bhojpurisahityangan.com

कुलोत्पन्न, सुंदर, वीर्यवान, वीर, गौ-ब्राह्मण रक्षक आदि गुणों से युक्त व्यक्ति को नायक बनाने की मान्यता कहीं कोने में पड़ी है। हिंदी साहित्य की मुख्यधारा में भोजपुरी के प्रसिद्ध नाटककार भिखारी ठाकुर की स्वीकृति सवाल्टर्न समाज के उभार की देन है। यद्यपि राहुल सांकृत्यायन, जगदीशचंद्र माथुर जैसे कुछ विवेकवान लेखकों ने उनके जीवनकाल में ही उनका महत्त्व समझा और उन्हें उचित सम्मान दिया।

इस पुस्तक में 'विदेसिया' के माध्यम से समाज के आर्थिक स्थिति का आकलन किया गया है। किसी रचना के कथ्य में ही नहीं, बल्कि उसके शिल्प में भी वर्ग की पहचान अभिव्यक्त होती है। 'बिरहा' अधीन वर्ग की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में जन्म था।

यह पुस्तक संश्लिष्ट है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर के कुछ गीत

सजनी

पियवा गइलन कलकातावा ए सजनी!
तूरि दिहलन पति-पत्नी-नातावा ए सजनी,
किरिन भीतरे परातवा ए सजनी! पिया...
गोड़वा में जूता नइखे, सिरवा पर छातावा ए सजनी,
कइसे चलिहन रहतवा ए सजनी! पिया...
सोचत-सोचत बीतत बाटे दिन-रातवा ए सजनी,
कतहूं लागत नइखे पातावा ए सजनी! पिया...
लिखत 'भिखारी' खोजिकर वही-खातावा ए सजनी,
प्यारी सुन्दरी के बातवा ए सजनी! पिया...

बारहमासा

करिया ना गोर बाटे, लामा नाही हउवन नाटे, मझिला जवान साम सुन्दर बटोहिया।
घुठी प ले धोती कोर, नकिया सुगा के ठोर, सिर पर टोपी, छाती चाकर बटोहिया।
पिया के सकल के तूं मन में नकल लिखऽ, हुलिया के पुलिया बनाइ लऽ बटोहिया।
आवेला आसाढ़ मास, लागेला अधिक आस, बरखा में पिया घरे रहितन बटोहिया।
पिया अइतन बुनियां में, राखि लिहतन दुनियां में, अखड़ेला अधिका सवनावां बटोहिया।
आई जब मास भादो, सभे खेली दही-कादो, कृस्न के जनम बीती असहीं बटोहिया।
आसिन महीनवां के, कड़ा घाम दिनवां के, लूकवा समानंवां बुझाला हो बटोहिया।
कातिक के मासवा में, पियऊ का फांसवा में, हाड़ में से रसवा चुअत बा बटोहिया।
अगहन-पूस मासे, दुख कहीं केकरा से? बनवां सरिस बा भवनवां बटोहिया।
मास आई बाघवा, कंपावे लागी माघवा, त हाड़वा में जाड़वा समाई हो बटोहिया।

www.bhojpurisahityangan.com

पलंग वा सूनवां, का कइलीं अयगुनवां से, भारी ह महिनवां फगुनवां बटोहिया।
अवीर के घोरि-घोरि, सब लोग खेली होरी रंगवा में भंगवा परल हो बटोहिया।
कोइलि के मीठी बोली, लागेला करेजे गोली, पिया विनु भावे ना चइतवा बटोहिया।
चढ़ी वइसाख जब, लगन पहुंची तब, जेठवा दबाई हमें हेठवा बटोहिया।
मंगल करी कलोल, घरे-घरे बाजी ढोल, कहत 'भिखारी' खोजऽ पिया के बटोहिया।

जतसारी

डगरिया जोहत ना, बीतत बाटे आठ पहरिया हो डगरिया जोहत ना।
धोती पढ़धरिया धइ के कान्हावा पर चदरिया हो।
ववरिया झारि के ना, होइवऽ कवना सहरिया हो ववरिया झारि के ना।
एकऊ ना भेजवलऽ खत कतहूं से खवरिया हो।
नगरिया देखि जा ना, नइखीं खोजत बटसरिया हो नगरिया देखि जा ना।
केइ हमरा जरिया में भिरवले बाटे अरिया हो।
चकरिया दरि के ना, दुख में होत वा जतसरिया हो चकरिया दरि के ना।
परोसि कर थरिया, भात-दाल-तरकरिया हो।
लहरिया उठेला ना, रहितऽ करितऽ जेवनरिया हो लहरिया उठेला ना।
कहत 'भिखारी' मनवां करेला हर घरिया हो।
उमरिया भरिया ना, देखत रहतीं भर नजरिया हो।

गीत

पिया निपटे नादानवां ए सजनी।
हमरा घोंटात नइखे कनवां भर अनवां ए सजनी,
चाभत होइहें मगही पानवां ए सजनी! पिया...
भीतरे रोवत वाड़न तनवां में मनवां ए सजनी,
छोड़त होइहन मुसुकानवां ए सजनी! पिया...
लड़िका नइखन, भइल वाड़न मस्तानावां ए सजनी,
जेकर हइसन बा जनानावां ए सजनी! पिया...
गावत 'भिखारी' हउए कुतुबपुर मकानवां ए सजनी,
प्यारी सुन्दरी के गानावा ए सजनी! पिया...

www.bhojpurisahityangan.com

परिछावन गीत

चलनी के चालल दुलहा, सूप के झटकारल हे;
दिअका के लागल बर, दुआरे बाजा बाजल हे।
आंवा के पाकल दुलहा, झांवा के झारल हे;
कलछुल के दागल, बकलोलपुर के भागल हे।
सासु का अंखिया में अन्हट वा छावल हे;
आइ कर देखऽ बर के पान चभुलावल हे।
आम लेखा पाकल दुलहा, गांव के निकालल हे;
अइसन बकलोल बर चटक देव का भावल हे।
मउरी लगावल दुलहा, जामा पहिरावल हे;
कहत 'भिखारी' हवन राम के बनावल हे।

गीत

ए मकई, तोहार गुन गूथबऽ माला।
भात से तरत भव, लावत गरीब लव;
पूरा-पूरा पानी दिआला । ए मकई...
सातू-मिरचाई-नून, खइला से सूखेला खून;
साधु लेखा रूप बनि जाला। ए मकई...
भूंजा भर झोरी-झोरी, जहां-तहां खोरी-खोरी;
खात बाड़न बाल-गोपाला। ए मकई...
धन ह धनहरा ढाठा, खात लगहर-नाठा;
लेंढ़ा घोनसारी में झोंकला। ए मकई...
दारा-गूर-दहि सान, कृष्ण कही-कही;
मुंहवां में माजा बुझाला। ए मकई...
भुट्टा भगवान विमान खास आई जात;
मन बैकुण्ठ चलि जाला। ए मकई...
करत 'भिखारी' खेला, जइहन मलेछू मेला;
गंगा तीरे बहुते बोआला। ए मकई...

www.bhojpurisahityangan.com

कविता

ओदर से हउअन बेटा हमार, ओदर से।
सांच बात में आंच लागत बा, पूर्छी बोला के नाऊ-चमार। ओदर से...
पुत्र भइल जीभ स्वाद गइल सभ, तनिको ना खइलीं बेकार। ओदर से...
अब आगा पर दागा होखत बा, घेरलस ठग बटवार। ओदर से...
कहत 'भिखारी' तइयारी भइल जब, पिअला से दूध के धार। ओदर से...

चौपाई

चारो तरफ से उठल हावा। एह में नइखे केहू के दावा ॥
बबुआ हउवन बेटा हमार। पूर्छी बोला के नाऊ-चमार ॥
नव महीना पेट के भीतर। रहसु त पूजलीं देवता-पितर ॥
जनम के समय में दुख भइल। इहे बुझाय जे अब जीव गइल ॥
होखत रहे राम से बात। असहीं होला जीव के घात ॥
लालच में ना लउके जान। बेटा दिया दऽ हे भगवान ॥
बबुआ भइल आसरा लागल। अब घेरले बा दू गो पागल ॥
दूनों ओर के जोर बा भारी। राम-राम कहि रटत 'भिखारी' ॥
हम अबला कछुओ ना जानी। पंच गोसइयां राखऽ पानी ॥
झगड़ा के ना जानी भेद। होखत बा करेज में छेद ॥
रो-रो कहे 'भिखारी' नाई। बेटा दिया दऽ काली माई ॥
कुतुबपुर में बाटे घर। हमहीं हई बेटा के जर ॥
जिला छपरा हउए खास। बबुआ में लागल बा आस ॥

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

बेटा से
विलाप गान

सिवसती गनपति, हरहु बेकार मति;
चरन के चेरी के इयाद राखऽ हो बबुआ!
पेटवा भीतर मांही, गम कुछ रहे नाहीं;
तबहीं से आसरा लगवलीं हो बबुआ!
बनि के तोहार कुल, लालच में गइलीं भूमि;
नव मास ढोवलीं मोटरिया हो बबुआ!
दिन-रात हूल आवे, घर ना आंगन भावे;
चलत में गोड़ भहरात रहे हो बबुआ!
जब होखे लागल पीरा, दुखवा समुझऽ हीरा;
मुखवा से कहतानी कमती हो बबुआ!
सुनऽ दुलरू! कहीले से, चार दिन पहिले से;
सउरी में दांत लागि जात रहे हो बबुआ!
केहू कहे हउवे दूत, केहू कहे हउवे पूत;
केहू कहे भीतरे मुअल बा हो बबुआ!
केहू कहे मरि जाई, चुरइल धइले बा माई;
सांड़ासा संघरनी के खइलसि हो बबुआ!
अब-तब घरी रहे, इहि सभ केहू कहे;
चमइन हाथ लाके कढ़लसि हो बबुआ!
नया भइल जनम मोर, असहीं ह पैदा तोर;
तेलवा लगाइ के अबटलीं हो बबुआ!
सुधि करऽ भइला के, गूह-मूत कइला के;
माई मत जानऽ हमें दाई जानऽ हो बबुआ!
कहत 'भिखारी' नाई, कवन करीं उपाई;
मुंहवां के तोहरे दुआरवा हो बबुआ!
कुतुबपुर हउवे ग्राम, रामजी संवारऽ काम;
जाति के हजाम जिला छपरा हो बबुआ!

www.bhojpurisahityangan.com

गीत

अइसन लिखलन करम में विधाता!
सुंदर नर-तन विमल पाइ के टूटल जगत से नाता।
हीत-मित्र केहू काम न आवत, बैरी भइलन पितु-माता ॥
सभा-मध्य में बध होखत वानी, सुनहु राम सुखदाता।
वड़ उपहास भइल घिचोर के, एको ना 'भिखारी' से कहाता ॥

चौपाई

तीन जना में झगड़ा भइल। गबरघिंचोरन के जीव गइल ॥
जेकर हिस्सा जहां से होई। काटि के बांटि लेहु सब कोई ॥
करनी के फल परल कपारा। तन पर चक्कू चलल हमारा ॥
वड़का दुख परल जगवन्दन। भइल अकाल मृत्यु रघुनन्दन ॥
जरिये चलली मइया कुचाली। छुड़ी का हाथे भइलि हलाली ॥
रामचन्द्र अवधेस कुमारा। वहे चाहत वा खून के धारा ॥
लखन, भरत, सतरूघन भइया। भंवर से पार करहु मोर नइया ॥
धनुस-वान धरि चारो भाई। एह अवसर पर होखऽ सहाई ॥
ना कइलीं तीरथ-ब्रत-दान। बालकपन बा हे भगवान ॥
माई-वाप के सेवा नाहीं। नाहक नर भइलीं जग माहीं ॥
सिर पर पहुंचल तुरते काल। देरी भइल दसरथ के लाल ॥
भइल सिकाइत जग में भारी। दूगो बाप एक महतारी ॥
एह जीवन ले मूअल बेस। सुभ गति दे दऽ सिरी अवधेस ॥
जयति-जयति जय कौसल-किसोरा। नइखे आवत करे निहोरा ॥
दाया तोर मोर अग्याना। करिहन तुरत परान पेयाना ॥
कुतुवपुर के कहे 'भिखारी'। जइसन मरजी होय तिहारी ॥

www.bhojpurisahityangan.com

गाना

धन-धन मालिक माया तेरी, लोक-वेद सव गाता है।
तीन लोक के बीच में एगो लिखनेवाला विधाता है।
ऊंच-नीच करनी जैसा करता, वैसा फल पाता है।
माई, भाई, वावू, कवीला झूठ जगत के नाता है।
गवरघिंचोरन आज जगत से जमपुर को चल जाता है।
सभा-मध्य जल्लाद का हाथे छुड़ी गला से खाता है।
सूर्य उदय जव तक जीवन अब तुरत रात चलि आता है।
अंधकार का डर से मनुआं रोकर के पछताता है।
कुतुबपुर के नाई 'भिखारी' तीनों झगड़ा गाता है।
महादेव के, पारबती के चरन में सीस नवाता है।

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

सम्यक प्रकाशन : एक परिचय

सम्यक प्रकाशन भगवान बुद्ध और उनके द्वारा स्थापित बौद्ध धम्म, बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. बी.आर. आंबेडकर, महान सम्राट अशोक, जोतिबा फुले, छत्रपति शाहूजी तथा देश के अन्य सामाजिक क्रांतिकारियों, समाज सुधारकों व उन महान विभूतियों से सम्बंधित साहित्य के प्रकाशन एवं उनके मिशन के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित है। यह प्रकाशन सस्ते और रियायती मूल्य पर मूल्यवान, दुर्लभ एवं सचित्र साहित्य उपलब्ध कराता है। अब तक सम्यक प्रकाशन द्वारा 14 भाषाओं में लगभग 2,000 छोटी-बड़ी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। समाज के प्रमुख क्रांतिकारियों, समाज-सुधारकों, प्रमुख वीर-वीरांगनाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दृष्टिगत रखते हुए सरल भाषा में सचित्र पुस्तकें तैयार करने में इस प्रकाशन का कोई सानी नहीं है। इसकी स्थापना विश्व प्रसिद्ध चित्रकार **बौद्धाचार्य शांति स्वरूप बौद्ध** ने की है, जो सरकारी राजपत्रित पद को ठुकरा कर सांस्कृतिक, कलात्मक, साहित्यिक, सामाजिक क्रांति को सफल बनाने के लिए अपने समस्त साधनों सहित पूर्णतः समर्पित हैं।

सम्यक प्रकाशन का संपादक मंडल प्रतिष्ठित एवं जनप्रिय विद्वानों से युक्त है, जो उचित जांच-परख और समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पुस्तकों का प्रकाशन हेतु चयन करता है। सम्यक प्रकाशन की विगत वर्षों में बौद्ध तथा आंबेडकरी साहित्य के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के प्रकाशन में प्रमुख भूमिका उल्लेखनीय है व भविष्य में भी अपने लक्ष्य के प्रति पूरी तरह सजग रहेगा। नारी कल्याण व समाज को अंधविश्वास, ढोंग और पाखंड के चंगुल से निकालने के लिए बुद्धिवादी एवं तर्कशील साहित्य के प्रकाशन के लिए सम्यक प्रकाशन पूर्णतः कटिबद्ध है।

भारतवर्ष का मूलनिवासी समाज आज अपनी अस्मिता की पहचान के लिए जूझ रहा है। हमारी अलग पहचान तभी बन सकती है जब हम अन्य पहलुओं के साथ अपनी संस्कृति के अनुकूल भाषा एवं शब्दों का प्रयोग करें। हर्ष क विषय है कि सम्यक प्रकाशन भाषा एवं शब्दों के माध्यम से मूलनिवासी अस्मिता की स्थापना में भी अग्रणीय भूमिका निभा रहा है।

सम्यक प्रकाशन बौद्ध संस्कृति एवं मूलनिवासी क्रांतिवीरों से सम्बद्ध सहित्य को गौरवशाली ढंग से प्रकाशित करने के लिए प्रयासरत है। वास्तव में इस प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साहित्य इस देश के शोषित, प्रताड़ित, वंचित एवं महिला समाज के लिए एक वैकल्पिक मीडिया की भूमिका निभा रहा है। हर्ष का विषय यह है कि सम्यक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अनेक ग्रंथ एवं ग्रंथकार राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा पुरस्कृत किए जा चुके हैं। यह तथ्य भी महत्त्वपूर्ण है कि सम्यक प्रकाशन को दिल्ली बुक फेयर, प्रगति मैदान में 2 बार सम्मानित किया जा चुका है।

बेरोजगार युवकों को साहित्य की विक्री के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराना भी सम्यक प्रकाशन का परम ध्येय है। सम्यक प्रकाशन ने विगत कई वर्षो से समाज के प्रतिष्ठित विद्वान लेखकों एवं समाजसेवियों के उत्साहवर्धन हेतु 'सम्यक साहित्यरत्न सम्मान' से विभूपित करने की योजना बनाई है। इसलिए अब यह संस्थान मात्र पुस्तक प्रकाशन तक ही सीमित न रहकर समूचे आंबेडकरी-बौद्ध आंदोलन का संवाहक बन चुका है। इस ऐतिहासिक कार्य में आप सभी का सकारात्मक सहयोग अपेक्षित है।

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक परिचय

नाम : जीतेंद्र वर्मा

जन्मतिथि : 15 सितंबर, 1973

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी)

पी.एचडी., पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार

प्रमुख प्रकाशित पुस्तकें—

(1) साहित्य का समाज शास्त्र और मैला आँचल (आलोचना)

(2) संत दरियादास,

(3) अमर शहीद जगदेव प्रसाद (दोनों जीवनी)

(4) सुबह की लाली (उपन्यास)

(5) आधुनिक भोजपुरी व्याकरण

(6) अब ना मानी भोजपुरी (हास्य-व्यंग्य संग्रह)

(7) सरोकार से संवाद (बातचीत)

प्रमुख संपादित पुस्तकें—

(1) ग्रामीण जीवन का समाजशास्त्र (आलोचना)

(2) गोरख पांडेय के भोजपुरी गीत (गीत-संग्रह)

(3) यह कहानी यही खत्म नहीं होती (आलोचना)

संप्रति : स्वतंत्र लेखन

साहित्य के सामाजिक सरोकार में विश्वास करने वाले डॉ. वर्मा डॉ. भीमराव आंबेडकर को अपना आदर्श मानते हैं।

संपर्क : वर्मा ट्रांसपोर्ट, राजेंद्र पथ, सीवान-841226 (बिहार)

मोबाइल : 9955589885

ईमेल : jvermacompany@gmail.com

सम्यक प्रकाशन

32/3, पश्चिम पुरी, नई दिल्ली—110063

मो. : 9810249452, 9818390161

Email : hellosamyak1965@gmail.com Web : www.samyakprakashan.in

ISBN : 978-93-89849-98-1

₹ 40

9 789389 849981